केवल राम कृत

रासमान के पद

सम्पादक: एलन एंटिवसिल

वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन

केवलराम कृत

रास मान के पद

सम्पादक :

एलन एंट्विसिल

वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन—२८११२१ (उ० प्र०)

Vrindaban Research Institute, Vrindaban 1986

प्रकाशक : वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

संस्करण : प्रथम, १९८६ ई०

मूल्य : तीस रुपये

मुद्रक : ब्रज बिहारीलाल शर्मा,
बी.एस-सी., एल-एल.बी.
विद्यालय प्रेस, केशीघाट, वृन्दावन—२८१ १२१ (उ० प्र०)

आमुख

सन् १९७६ से १९७८ तक वृन्दावन शोध-संस्थान में कार्य करते हुए उन पाण्डुलिपियों पर शोध-कार्य प्रारम्भ किया जिन्हें अष्टम गद्दी पर आसीन वल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामियों द्वारा डेरा गाजी खाँ से वृन्दावन में लाया गया था। इन पाण्डुलिपियों में केवलराम की कृतियाँ सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हुईं। उनके द्वारा लिखे गए तथा कथित ग्रन्थों में से मैंने 'रास' और 'मान' विषयों से सम्बन्धित एक पद-संग्रह का सम्पादन तथा अध्ययन के लिए चयन किया। तदन्तर यही मेरे शोध-प्रबन्ध का विषय बना (केवलराम कृत रास मान के पद—वल्लभ सम्प्रदाय की अष्टम गद्दी की एक मध्यकालीन हिन्दी कृति) जिस पर १९८२ में मुझे लन्दन विश्व विद्यालय द्वारा पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गई और जिसे १९८३ में इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, ग्रोनिंगन विश्व-विद्यालय (हॉलैण्ड) द्वारा सीमित संख्या में प्रकाशित किया गया।

प्रस्तुत ग्रन्थ में रास मान के पदों का सम्पादित पाठ संक्षिप्त भूमिका सहित दिया है। भूमिका में उठाए गए प्रश्नों के समाधान हेतु पाठक मेरे शोध-प्रबन्ध को पढ़ सकते हैं जिसमें अष्टम गद्दी तथा उसके गोस्वामियों के विषय में उपयोग में लाए स्रोतों के पूर्ण संदर्भों सहित विस्तृत जानकारी दी गई है। उसमें अंग्रेजी अनुवाद के साथ-साथ भाषा, व्याकरणगत वर्ण-विन्यास, प्रयुक्त छन्दों, एवं विभिन्न पाण्डुलिपियों में प्राप्त पाठान्तरों का सविस्तार विवेचन किया गया है।

डॉ० रामदास गुप्त तथा प्रो० जे० सी० राइट ने मेरे शोध प्रबन्ध का निर्देशन किया। मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं। डॉ० सी० शैकल के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं जिन्होंने पंजाबी भाषा के पदों को समझने में मुझे सहायता प्रदान की। मैं अष्टम गद्दी के गोस्वामियों का, विशेष रूप से सर्व श्री बाँकेलाल गोस्वामी, रतनलाल गोस्वामी, श्यामलाल गोस्वामी

एवं श्रवणलाल गोस्वामी का सदैव आभारी रहूंगा। उन्होंने अपनी पाण्डु-लिपियों के अध्ययन की सुविधा प्रदान की तथा अपनी परम्पराओं से अवगत कराया।

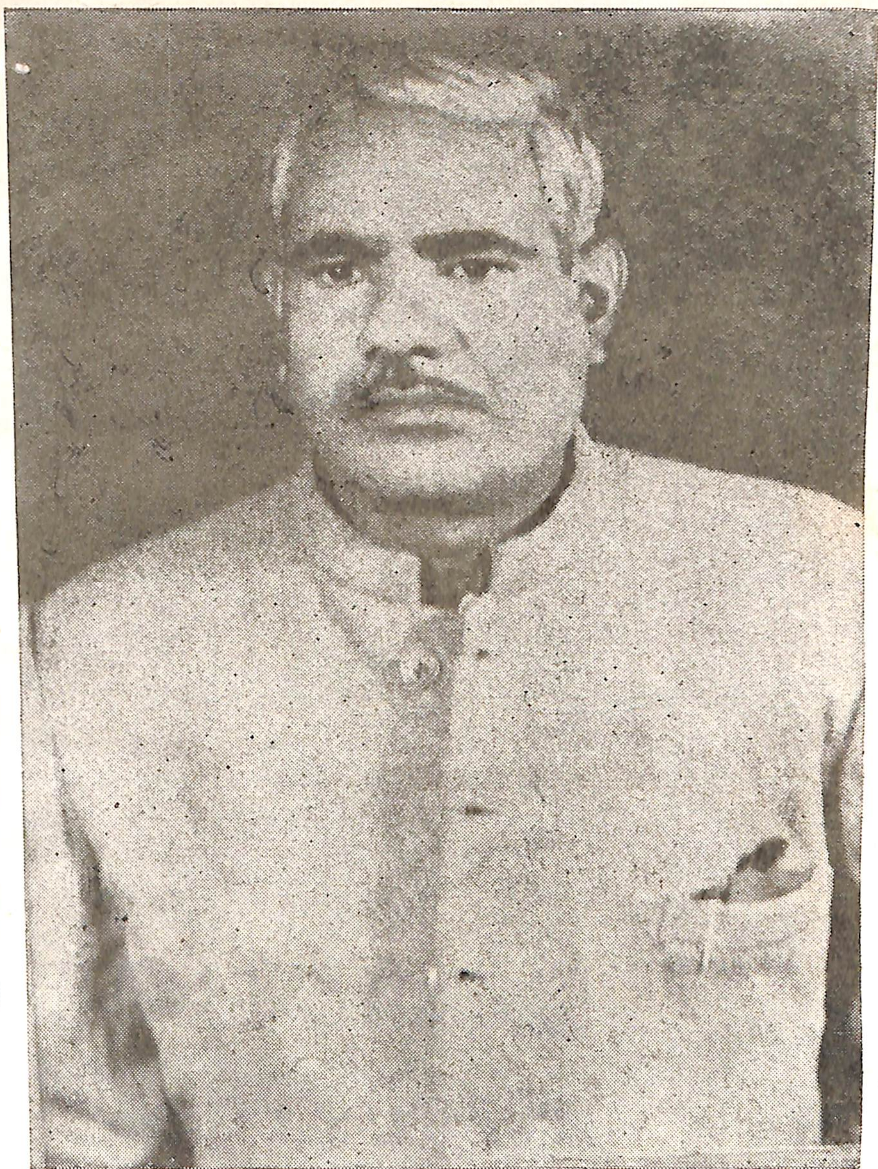
डॉ० उमा भास्कर, श्री राकेश शर्मा तथा कुमारी सुकेश शर्मा के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने भूमिका के हिन्दी संस्करण को तैयार करने और रास मान के पदों का देवनागरी में रूपान्तरण करने में सहयोग प्रदान किया।

मेरा शोध-प्रबन्ध पूर्ण ही होनेवाला था कि मुझे श्री रतनलाल गोस्वामी के देहावसान होने का दुखद समाचार मिला। किसी भी शोधार्थी को विभिन्न प्रकार के तथ्यों से अवगत करानेवाला उन जैसा सहानुभूतिशील तथा कृपालु व्यक्ति न मिला होगा। उनकी सहायता के बिना मेरा शोध-कार्य कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता था। उन से प्राप्त सहयोग एवं प्रोत्साहन तथा उनके साथ शोध-विषयक हुए दीर्घकालीन विचार-विमर्श के फलस्वरूप मेरा शोध-कार्य पूर्ण हो सका। तदर्थ प्रस्तुत ग्रन्थ उन्हीं की पुण्य-स्मृति में सादर समर्पित है।

वृन्दावन

१९८६

एलन एंट्विसिल



स्व० गोस्वामी श्रीरतनलाल जी की स्मृति में

विषय-सूची

भूमिका

अष्टम गद्दी और केवलराम

सन् १९४७ में भारत विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान बनने के बाद जो हिन्दू भारत आए उनमें वल्लभ सम्प्रदाय की एक शाखा के गोस्वामी परिवार भी थे, जो अष्टम गद्दी के नाम से प्रख्यात हैं। सिन्धु नदी की घाटी के क्षेत्र में इसके अनेक देवालय थे जिनमें एक प्रमुख देवालय मुल्तान शहर के निकट सिन्धु नदी के पश्चिमी किनारे अवस्थित डेरा गाजी खाँ नामक कस्बे में है। इस देवालय के गोस्वामीगण अपने इष्ट देव श्री गोपीनाथ जी सहित वृन्दावन में स्थित सुक्खन माता की कुँज में आकर बस गए और जितनी भी पाण्डुलिपियाँ वे ला सकते थे उतनी अपने साथ ले आए। इन पाण्डुलिपियों में गद्दी के संस्थापक श्री लालजी तथा उनके कुछ उत्तराधिकारियों एवं शिष्यों की कृतियाँ भी सम्मिलित हैं।

गद्दी के उद्भव के बारे में जानकारी हमें 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' नामक ग्रन्थ से प्राप्त होती है जिसे गोकुलनाथ द्वारा प्रणीत माना जाता है। इस ग्रन्थ पर हरिराय ने 'भाव प्रकाश' नामक टीका लिखी है। इसमें श्री वल्लभ जी के पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी के २५२ शिष्यों की कथाएँ वर्णित हैं। तुलसीदास की वार्ता में यह वर्णन मिलता है कि विट्ठलनाथ जी ने श्रीनाथजी की दैनिक आराधना के लिए अपेक्षित यमुना जल गोवर्द्धन पर लाने के लिए एक सारस्वत ब्राह्मण को नियुक्त किया था। इस कार्य को जल घड़िया सेवा के रूप में जाना जाता है। कुछ काल पश्चात् यह ब्राह्मण दम्पति दिवंगत हो गए और बालक तुलसीदास अनाथ हो गया। विट्ठलनाथ जी ने इस बालक को गोद ले लिया एवं उसे अपने पिता के जलाहरण के कार्य को जारी रखने का आदेश दिया। विट्ठलनाथ जी के संरक्षण में तुलसीदास जी बड़े हुए एवं स्नेहवश 'लालजी' कहकर पुकारे जाने लगे। अपने जीवन के अन्तिम समय में विट्ठलनाथ जी ने अपने सातों

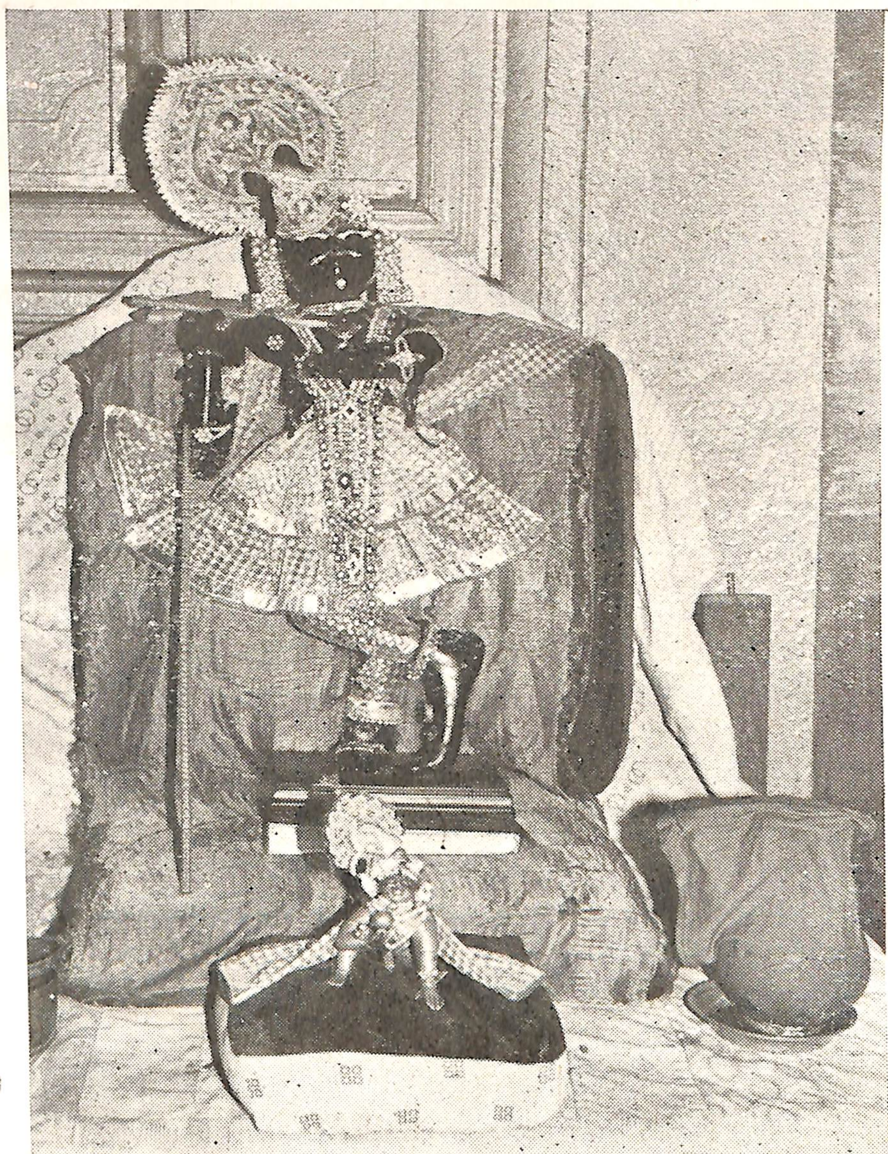
पुत्रों को स्वरूप (विग्रह) प्रदान किए जिससे वे अपनी गद्दियों की स्थापना कर सकें एवं सम्प्रदाय के अस्तित्व को जीवित रखने के साथ ही शिष्यों को दीक्षा प्रदान कर सकें। इस प्रकार वल्लभ सम्प्रदाय की प्रमुख सात गद्दियों की स्थापना हो गई। विट्ठलनाथ जी के पुत्रों के साथ पले-बढ़े तुलसीदास को उस समय बहुत निराशा हुई जब उन्हें किसी स्वरूप की प्राप्ति नहीं हुई। श्री कृष्ण ने विट्ठलनाथ को स्वप्न में आदेश दिया कि वे तुलसीदास को गोपीनाथ के स्वरूप में एक स्वरूप प्रदान करें ताकि वे वहाँ एक देवालय की स्थापना कर सकें। अन्त में कथा यह वर्णन करते हुए विश्राम लेती है कि तुलसीदास आठवें लालजी के नाम से प्रसिद्ध हो गए एवं उनके उत्तराधिकारियों ने सिंध में शिष्यों को दीक्षादान की परंपरा को बनाए रखा। डेरा गाजी खाँ से लाई गई पाण्डुलिपियों में परमानन्द द्वारा रचित 'लालजी कौ जन्म चरित्र' शीर्षक एक पाण्डुलिपि है जो वृन्दावन शोध-संस्थान में माइक्रो फिलम में उपलब्ध है (संदर्भः वृ० शो० सं० केटलॉग, १६८२, रील सं० १६, क्रम सं० २१७)। इस पाण्डुलिपि के अनुसार लालजी का जन्म १५५१ ई० में एवं देहावसान १६१८ ई० में हुआ। उनकी समाधि, जिसके आसपास उनके कुछ शिष्यों की भी समाधियाँ हैं, वृन्दावन में प्रस्कंदन घाट पर (मदनमोहन जी के मन्दिर के समीप) है। श्री लालजी के उत्तराधिकारी मथुरानाथ बने जो उनके चारों पुत्रों में ज्येष्ठ थे। मथुरानाथ का जन्म १५८८ई० में हुआ था। मथुरानाथ के गोकुलनाथ और केवलराम नामक दो पुत्र थे जिनका जन्म क्रमशः १६१० ई० तथा १६१७ ई० में हुआ था। श्री लालजी के द्वितीय पुत्र गिरिधर ने उत्तर में डेरा इस्माइल खाँ की ओर प्रस्थान किया जहाँ उन्होंने नागर जी देवालय की स्थापना की।

केवलराम जी श्री लालजी के उत्तराधिकारियों में सर्वाधिक लोकप्रिय हुए। वे केवल गोस्वामियों और उनके शिष्यों के बीच ही पूजनीय नहीं थे, अपितु डेरा गाजी खाँ एवं डेरा इस्माइल खाँ क्षेत्रों के हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य एक लोकप्रिय सन्त के रूप में विश्रुत थे। उनके विषय में अधिकांश जानकारी जनश्रुतियों से प्राप्त है। पाण्डुलिपि स्रोतों से तो उनके विषय में सिर्फ यह जानकारी मिलती है कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को उनका जन्म हुआ था तथा उनके

मदन मोहन (जन्म १६४४ ई०) और जगन्नाथ (जन्म १६४९ या १६५१ ई०) नामक दो पुत्र थे। गोस्वामियों के अनुसार जगन्नाथ का देहावसान सुक्खन बाई नामक बालिका से विवाह निश्चित होने से पूर्व ही हो गया था। सुक्खन बाई यद्यपि अन्य वैवाहिक प्रस्ताव स्वीकार कर सकती थी किन्तु उसने भक्तिमय जीवन-यापन का निश्चय किया। उसने वृन्दावन में निवास किया जहाँ कालान्तर में वह सुक्खन माता के नाम से विख्यात हुई।

एक बार जब केवलराम वृन्दावन दर्शन यात्रा पर आए हुए थे, सुक्खन माता के माथे में स्नान के समय यमुना में डुबकी लगाते हुए किसी प्रस्तर खण्ड से चोट लगी। उस रात्रि बलराम ने उन्हें स्वप्न में दर्शन देकर उसी स्थान पर प्रातः वापस जाने के लिए कहा। वे केवलराम के साथ वहाँ गईं जहाँ यमुना में उन्हें बलराम का विग्रह प्राप्त हुआ। गोरे दाऊजी के नाम से प्रसिद्ध इस श्वेत संगमर्मर की मूर्ति को एक देवालय, जिसे सुक्खन माता की कुंज नाम से जाना जाता है, में प्रतिष्ठापित किया गया। श्री गोपीनाथ जी के डेरा गाजी खाँ से १९४७ ई० में आने तक इस मूर्ति की इस देवालय में प्रमुख रूप से अर्चना होती रही।

यह प्रसिद्ध है कि केवलराम ने लम्बी यात्राएँ की थीं। उन्होंने न केवल उत्तर भारत के तीर्थ-स्थानों की, अपितु सिन्ध एवं अफगानिस्तान की भी यात्राएँ की थीं। डेरा इस्माइल खाँ में नागर जी देवालय में केवलराम की एक बैठक थी जहाँ वे भजन और ध्यान करते थे तथा उस स्थान को 'थल्ला' नाम से जाना जाता है। यह सिन्धु नदी के किनारे सुलेमान पर्वत श्रृंखला की तलहटी में बिलोट गाँव के समीप डेरा इस्माइल खाँ से साठ किलोमीटर उत्तर में अवस्थित है। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष बिलोट ग्राम में व्यतीत किए। यह भी कहा जाता है कि अपने अग्रज श्री गोकुलनाथ की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने यह उपयुक्त समझा कि अष्टम गद्दी का स्वामित्व डेरा गाजी खाँ में उनके पुत्र मदन-मोहन को सौंप दिया जाय। एक स्थानीय संत के रूप में उन्होंने लोक-प्रियता प्राप्त की एवं बौहड़ियाँ वाला के नाम से संबोधित किए गए क्योंकि उनका 'थल्ला' एक वट वृक्ष (जो स्थानीय बोली में बोहड़ नाम से पुकारा जाता था) के नीचे स्थित था।



वल्लभ सम्प्रदाय के अष्टम गद्दी के आराध्य-विग्रह
ठाकुर श्रीगोपीनाथ जी महाराज,
सुक्खन माता कुंज, वृन्दावन।

उनकी चत्मकारिक सिद्धियों और जादूगिरी की प्रतियोगिताओं में मुस्लिम पीरों पर प्राप्त विजयों के सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। ऐसी ही एक किंवदन्ती के अनुसार एक पीर ने जो प्रारम्भ में केवलराम के बिलौट में निवास करने का विरोधी था एक व्याघ्र को उन्हें डराने के लिए भेजा ताकि वे बिलौट से भाग जाएँ परन्तु वह व्याघ्र केवलराम के बगल में विनम्र भाव से बैठ गया। केवलराम ने उस पर पर टेक लगाई किन्तु वह ऐसे बैठा रहा मानो कि वह उनका तकिया हो। इस घटना को चित्रित करता हुआ एक चित्र मिलता है जिसका काल उन्नीसवीं सदी का पूर्वार्ध है (द्रष्टव्य प्लेट संख्या) जिसके पृष्ठ भाग पर निम्न दोहा लिखा हुआ है—

केहर को उपवर्ह धर बैठे केवलराम।
पाछे गिरि आगे सलिल योगासन अभिराम ॥

अर्थात्: केवलराम आकर्षक योग मुद्रा में व्याघ्र का तकिए की तरह प्रयोग करते हुए आसीन हैं। उनके पृष्ठ प्रदेश में पर्वत है और आगे मैदान में सरिता प्रवाहित हो रही है।

'थल्ला' एक चबूतरे के रूपमें होता था जिसे हिन्दू गोबर से लीपते थे और डेरा गाजी खाँ के गोस्वामियों द्वारा नियुक्त एक पुजारी इसकी देखभाल करता था। सन् १९४७ बाद इसे दूसरा रूप मिला जो मजार के सदृश है। चिराग के लिए इस में कुछ आले हैं और इसकी देखभाल के लिए मुजाविर की नियुक्ति बिलोट के पीर शाइ ईसा कत्तार की दरगाह के मखदूम करते हैं। 'थल्ला' के दर्शनार्थ हिन्दू तीर्थ यात्री जन्माष्टमी, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम ग्यारह दिनों और वैशाख संक्रान्ति (बैशाखी मेला, तीनों मेलों में सर्व प्रमुख है) के अवसर पर आते थे। हाथों में ध्वजाएँ लेकर वे टोलियों में वजीरिस्तान जैसे सुदूर प्रदेशों से यहाँ आकर धर्मशालाओं में ठहरते थे जिनके अवशेष थल्ला के समीप देखे जा सकते हैं। इस मेले की एक उल्लेखनीय बात यह थी कि वहाँ मिश्री का प्रसाद चढ़ाया जाता था जिसे पुजारी बाद में एकत्रित तीर्थ यात्रियों में लुटाते थे। तीर्थ यात्रियों द्वारा बतासे एवं वस्त्र थल्ला पर चढ़ाए जाते थे तथा नामकरण, उपनयन, चोला और मुण्डन जैसे संस्कार वहाँ

सम्पन्न किए जाते थे। आजकल केवल वे ही कुछ हिन्दू जो अभी भी पाकिस्तान में निवास करते हैं बिलौट के दर्शन कर पाते हैं किन्तु वहाँ से भारत में आए हुए अनुयायियों ने नई दिल्ली के इन्द्रपुरी मुहल्ले में ओह-ड़ियाँवाला 'थल्ला' नाम से एक नए थल्ले की स्थापना कर ली है जहाँ बैशाखी मेला अभी भी लगता है और जो संस्कार पहले बिलौट में किए जाते थे अब यहाँ किए जाते हैं। डेरा गाजी खाँ के गोस्वामियों के परिवार की एक शाखा ने हरिद्वार के कृष्ण नगर में एक और नया 'थल्ला' स्थापित किया है।

केवलराम की साहित्यिक रचनाएँ

केवलराम द्वारा रचित मानी जाने वाली कृतियाँ जो अष्टम गद्दी की पाण्डुलिपियों में उपलब्ध हैं उन में 'केवल' या 'केवल जन' की छाप मिलती है। नाभादास ने अपने मौलिक ग्रन्थ भक्तमाल में और राघवदास ने भी तीन भक्तों का नामोल्लेख केवलराम, केवल कूबा और केवल (दास) के रूप में किया है। उनमें से एक सम्भवत: 'केवल' छापधारी कविताओं का रचयिता रहा होगा जो कि दादूपंथी पद-संग्रहों में मिलती हैं, परन्तु उनमें कोई भी डेरा गाजी खाँ के केवलराम के रूप में नहीं पहचाना जा सकता है। 'केवलराम वृन्दावन जीवन' छापवाले पद, जो कुछ पद-संग्रहों में प्राप्त होते हैं, पृथक लेखक की कृति प्रतीत होते हैं। इस ग्रन्थ के केवलराम जी के पद तो केवल अष्टम गद्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों में मिलते हैं। ये पद ब्रज भाषा में हैं किन्तु उपदेशात्मक कविताएँ पंजाबी बोली में भी हैं। कुछ उपदेशात्मक पदों पर खड़ी बोली का भी प्रभाव है। उनकी अधिकांश कृतियाँ कृष्ण लीला का वर्णन करती हैं या उनमें विनय एवं उपदेशात्मक पद मिलते हैं। पाण्डुलिपियों में ५५० से अधिक पद हैं जो पद, कवित्त, सवैया, चौपाई, धमार एवं लिचारी के रूप में हैं। 'रतन सागर' नामक पद-संग्रह में मूल रूप से तीन खण्ड हैं, प्रत्येक में १०१ पद हैं (कुछ पर्ण नष्ट हो जाने से कुछ पदों का अभाव है) तथा और १२८ पद रास मान के पद-संग्रह में मिलते हैं। अन्य कुछ फुटकर पद विभिन्न पद-संग्रहों में उपलब्ध हैं।

'स्नेह सागर' और 'ज्ञान दीपक' केवलराम की बृहद् कृतियाँ हैं। पहली कृति (वृ० शो० सं० प्राप्ति संख्या ११३४१) में २०६२ दोहे हैं। इसके प्रारम्भ में स्नेह भाव की व्याख्या से पूर्ण दोहे हैं तथा बाद में कृष्ण के विभिन्न कौतुक वर्णित हैं। नखशिख और महारास का भी विस्तृत वर्णन है (महारास के पद भागवत पुराण के अंश रासपंचाध्यायी पर आधारित हैं)। इस कृति में कृष्ण के सगुण और निर्गुण रूपों की व्याख्या हुई है। 'ज्ञान दीपक' में १६०० साखियाँ हैं जो 'अंग' नाम से अध्यायों में विभाजित हैं। भाषा ब्रज भाषा है परन्तु खड़ी बोली के शब्दों का भी बाहुल्य है। शैली और उपदेश सन्त परम्परा के कवियों की कृतियों के समान हैं। कुछ अन्य फुटकर उपदेशात्मक साखियाँ और दोहरे पाण्डुलिपियों में मिलते हैं। केवलराम ने कुछ छोटी रचनाएँ भी की थीं—'जोगी लीला,' 'मान-लीला,' 'दान लीला,' 'प्रिया प्रीतम विवाह,' 'रास मंजरी,' 'बाहर माँह,' 'सार पचीसी,' 'श्री लाल पचीसी' तथा 'मथुरानाथ जी की स्तुति'। इनके अलावा 'उत्सवरत्न माला' नामक कृति में अष्टम गद्दी द्वारा मनाए जाने वाले उत्सवों के लिए निर्णय, विधि और कीर्तन के कुछ पद हैं। पूर्वोक्त अधिकांश कृतियों के माइक्रोफिलम वृन्दावन शोध संस्थान में उपलब्ध हैं (द्रष्टव्य-माइक्रोफिलम कैटलॉग, १९८२ या वृ० शो० सं० प्राप्ति संख्या ११३३७)।

पाठ का संपादन

'रास मान के पद' का क्रमबद्ध संपादन दो स्रोतों से हुआ है। दोनों ग्रन्थ पृथक कृतियों से युक्त हैं। इन में से एक समय सं० १८७६ है जो वृन्दावन शोध संस्थान में माइक्रोफिलम पर उपलब्ध है (द्रष्टव्य—माइक्रो-फिलम कैटलॉग, १९८२, रील नं० १६, एस० नम्बर १९९ ई एफ)। दूसरी पाण्डुलिपि जो गोस्वामी रतनलाल ने वृन्दावन शोध संस्थान को भेंट की है उसमें तिथि का उल्लेख नहीं है (वृ० शो० सं० ११३३७) प्रथम पाण्डुलिपि जो सं० १८७६ की है उसके अन्त में एक कवित्त है जिससे प्रतीत होता है कि इन ग्रन्थों की प्रतिलिपि गोस्वामी बाँके बिहारी (मृत्यु सं० १८४७) के लिए की गई या उनके निजी संग्रह के कुछ ग्रन्थों से प्रतिलिपि की गई।

श्रीमद्गोस्वामी बाँके बिहारी जी के ग्रन्थ लिष्ये,
लए ग्राम मध्य मूलचन्द जोशी आन के।
संवत् रितु दधि वसु धरा माघ वदी बीज
रवि घस्र पुष्य रिष प्रीति योग जान के............

दूसरे संग्रह में तिथि का उल्लेख नहीं है लेकिन स्पष्टतः यह अधिक पुरानी है क्योंकि लिपिगत अशुद्धियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सं० १८७६ वाली पाण्डुलिपि की प्रति तृतीय प्रतिलिपि की सहायता से की गई जो कि अप्राप्य है। कुल २१ पद अन्य पाँच पाण्डुपियों में फुटकर पदों के रूप में मिलते हैं जिनके विविध पाठों से यह स्पष्ट है कि दो पूर्ण अनुक्रमों के प्रयोग की अपेक्षा विभिन्न स्रोतों से उन्हें प्राप्त किया गया है।

इस संस्करण में सं० १८७६ वाली पाण्डुलिपि में प्रयुक्त क्रम एवं शीर्षक के अनुसार पदों को दिया है लेकिन रचना काल रहित पाण्डुलिपि में दिए गए पाठों को प्राथमिकता दी गई है क्योंकि मूल प्रति में उपलब्ध पदों का अधिक प्रामाणिक तथा पुराना रूप उन में सुरक्षित है। पुरानी पाण्डुलिपि में जहाँ 'अदभुत,' 'कवल,' 'ब्रिन्दाबन' जैसे शब्द रूप प्रयुक्त हुए हैं वहाँ सं० १८७६ की पाण्डुलिपि में लिपिकारों ने 'अद्भुत,' 'कमल' और 'वृन्दावन' जैसे तत्सम शब्द रूपों को प्राथमिकता दी है।

व्याकरण की दृष्टि से प्राचीन पाण्डुलिपियाँ अधिक प्रामाणिक हैं; अधिकतर लिपिकारों ने अपभ्रंश में प्रयुक्त व्यवस्थानुसार अकारान्त, इकारान्त एवं उकारान्त विभक्ति प्रभेद को ग्रहण किया है। सं० १८७६ की पाण्डुलिपि में इकार और उकार अकार में परिर्वातत हो गए हैं यथा आधुनिक मानक हिन्दी में दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार जहाँ प्राचीन लिपि में 'कर सों करु' लिखा गया है, यह मूल और परिवर्तित विभक्ति के मध्य भेद को सूचित करता है बाद की लिपि में साधारणतः 'कर सों कर' लिखा गया। प्राचीन लिपि में सप्तमी विभक्ति के लिए अन्त में 'इ' को रखा गया है (यथा—उरि मोत्यन की माल), प्रत्यय (यथा—देखि, भूलि गई) और स्त्रीलिंग के तद्भव संज्ञा शब्दों का प्रयोग बाद की लिपी में अधिकांश उदाहरणों में केवल 'अ' के रूप में हुआ है।

लिपिगत वर्ण-विन्यास के कुछ रूपान्तरों में एक रूपता और स्पष्टता बनाए रखने तथा लिपिगत स्पष्ट अशुद्धियों के सुधार के लिए कुछ संशोधन भी प्रस्तुत किए गए हैं।

'ष' अक्षर का प्रयोग तत्सम 'ष' के साथ ही तत्सम और तद्भव 'ख' के लिए भी हुआ है। संपादित पाठ में 'ख' का प्रयोग तत्सम और तद्भव 'ख' के रूप में हुआ है जब कि 'ष' केवल तत्सम के लिए प्रयुक्त है यद्यपि कवि का वांछित उच्चारण 'स' या 'ख' था (यथा—'वृषभानु' के लिए 'ब्रिखभान'; द्रष्टव्य—पद ६२ जहाँ 'देखी' और 'विशेषी' की तुक मिलती है)। लिपिकार प्रायः 'ख्य' के लिए 'क्ष' का प्रयोग करते हैं (यथा—'देख्ये' के लिए 'देक्षे') लेकिन संपादित पाठ में केवल 'ख्य' ही प्रयुक्त है।

लिपिकार ने प्रायः 'ड' के लिए 'ढ' लिखा है जिसे आवश्यकता-नुरूप एक रूपता के लिए सुधार दिया गया है। लिपिकार ने 'ड़' और 'र' में अन्तर नहीं किया है इसलिए सिर्फ 'र' ही संपादित पाठ में रखा गया है क्योंकि यह निश्चित नहीं है कि किस हद तक 'ड़' का उच्चारण होता था और कवि का क्या अभिप्राय था।

'ऐ' और 'औ' दोनों मात्राओं के लिए लिपिकारों ने 'चैन'—'चइन' और 'कौने'—'कउने' जैसी वर्तनी का प्रयोग किया है भले ही इनका छन्द की दृष्टि से मेल न रहा हो। यद्यपि 'चैन' और 'कौने' जैसी वर्तनी गौण है फिर भी सम्पादित पाठ में उसका प्रयोग शुरू से अन्त तक हुआ है क्योंकि छन्द एवं तुकबन्दी तथा विभिन्न अक्षरों के प्रयोग यथा 'ऐ' के लिए 'ए' और 'औ' के लिए 'ओ' से प्रकट होता है कि इस उच्चारण का व्यापकता की दृष्टि से कहीं ज्यादा प्रचलन था।

लिपिकारों ने चन्द्रबिन्दु का प्रयोग नहीं किया है। अनुस्वार और आनुनासिक के लिए बिन्दु का प्रयोग किया है। सम्पादित पाठ में अनु-नासिक के लिए चन्द्र बिन्दु प्रयुक्त है जो दीर्घ के बजाय ह्रस्व समझा जाना चाहिए (यथा—नँद नंदन)। स्वरों की अनुनासिकता के लिए बिन्दु का प्रयोग हुआ है। 'म' और 'न' व्यंजनो की समीपता प्रदर्शित करने के लिए बिन्दु का प्रयोग (यथा—प्रेंम, रोंम, मांनो) लेकिन इस प्रकार के अनुनासिक का प्रयोग संपादित पाठ में वहीं हुआ है जहाँ व्याक-रण की दृष्टि से अन्तिम वर्ण के साथ आवश्यक था, शेष स्थितियों में नहीं।

सहजजात या परिवर्तित होने वाले अनुनासिक (यथा—तू/तूं, वाकी/वांकी) को पाठ में पुरानी पाण्डुलिपियों के अनुसार इंगित किया गया है यद्यपि लिपिकार कभी-कभी इनका प्रयोग बिना तारतम्य के करते हैं। कहीं-कहीं इस प्रकार की अनुनासिकता डेरा गाजी खाँ की स्थानीय बोली के उच्चारण के प्रभाव से आई हुई प्रतीत होती है यद्यपि कभी-कभी यह अपभ्रंश से ली गई वैयाकरणिक विभक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है (यथा—ठोरें, कौनें, कैसें)।

'है' और 'हैं' के प्रयोग की लिपिगत असमानता को मानक ब्रज और हिन्दी प्रयोगों के अनुसार शुद्ध किया गया है।

ह्रस्व और दीर्घ स्वरों में छन्द के अनुसार उतना ही सुधार किया गया है जितना सम्भव था। लिपिकारों ने प्रायः सर्वत्र दीर्घ स्वरों मात्राओं के चिन्हों '—ई' और '—ऊ' का प्रयोग किया है। छन्द के अनुसार इनकी जरूरत है या नहीं है इस पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया।

कुछ स्पष्ट और अनालोच्य लिपिगत त्रुटियों (यथा—'बलभद्र' के स्थान पर 'बलबद्र') अथवा अनव्यवस्थित प्रयोगों (यथा—'उरझनि' के लिए उर्झनि') को संशोधित किया गया है। व्यर्थ और छन्दरहित शब्दों को जिन्हें लिपिकारों ने पाठ में जोड़ दिया है गोल कोष्ठकों में प्रदर्शित किया गया है। पाठ में जो शब्द छूटे हुए प्रतीत हुए उन्हें लेखक ने अपने अनुमान से मध्य कोष्ठक में दिखाया है।

कविता की भाषा अपेक्षाकृत शुद्ध ब्रज भाषा है; अन्त में '—ओ' का प्रयोग है जब कि साधारणतः '—औ' प्रयुक्त होता है। कुछ कविताओं में सिन्धी या पंजाबी शब्द प्रयुक्त हैं (यथा—'चुखु असां दो भाली' पद १२२ में, 'चोल—' और 'संध—' क्रियाओं का प्रयोग ब्रज भाषा में प्रायः 'चला—' और 'सक—' के लिए हुआ है और 'काई' का प्रयोग स्त्रीलिंग के रूप में 'कोई/कोऊ' के लिए है)। तीन पद (सं० १११, ११४ और ११८) पंजाबी में लिखे गए हैं जिसमें ब्रज, खड़ी बोली या सिन्धी के रूप मिले हुए हैं।

कुछ अल्पज्ञात शब्दों और मुहावरों की व्याख्या पादटिप्पणियों में दी गई है। दो कविताओं में (सं० २१ और १०५-२) विभिन्न पदों की पंक्तियों का समावेश लिपिगत अशुद्धता के कारण हुआ है। —❀—



लालजी के पौत्र एवं उत्तराधिकारी ग्रन्थकार केवलराम जी

केवलराम कृत

रास मान के पद

केवलराम कृत

रास मान के पद

राग श्री

प्रिया मनु हरनि छबि धरनि श्री, क्रिष्ण मनु मोहि लीना।
निरखि छबि रूप की कांति कों, पीय लखि भए दीना॥
भए मोहन दीन, निरखि होए लीन
प्रेम बाढयो रिदे अपर प्यारे।
इंद सम बदन है, सुधा को सदन बर
प्रेम हिति उमगि त्रैलोक वारे॥
अंकन वसत झाल, चलत मद गज चाल
मंद मुसकनी अदभुत प्रवीना।
प्रिया मनु हरनि छबि धरनि श्री, क्रिष्ण मनु मोहि लीना॥

नैन मृग तरुन अलि मीन मन, चैन सभ दूरि कीए।
मैन खँजरीट अरु कवल छबि, निरखि नहि धीर हीए॥
धीर धारत नाँहि, वदत मन के माँहि
प्रिया छबि रूप नहि तुल्य कोई।
कुंज मों डोलहे, मधुरि सुरि बोलहे
निरखिके रिदे मों मुदित होई॥
सखी ललिता संग, करत बहुविध रंग
कुसुम बन सुधा मों सिंचि लीए।
नैन मृग तरुन अलि मीन मन, चैन सभ दूरि कीए॥

लता सों भुजा धरि भामुनी, करत हैं केल कुंजें।
साथ दूती चतुर एक तहँ, मधुप मिलि बहुतु गुंजें ॥
मधुप गुंजा मान, ओट लीनी कान
निरखि छबि त्रिपति नांहिन अघावे।
रूप रस सिंध मों, छक्चे हैं साँवरे
रिदे मों धीर छिनु नाँहि आवे ॥
करी तब बेन धुनि, लई दुलहनो सुनि
मिल्ये हैं उरझि दोउ रसिक पुंजें।
लता सों भुजा धरि भामुनी, करत हैं केल कुंजें ॥

दोउ हितु जानि रति मानि अति, चल्ये संकेत आए।
भयो आनंदु सुख चैन सभ, कीए हैं मनहि भाए ॥
मनहि भायो कीन, केल उभयो पीन
नेंह रस लीन आनंद कंदा।
बन्ये अदभुत भाँति, अंकि नख सिख कांति
प्रिया सँगि राजहे क्रिष्ण चंदा।
एही रसु बरनि नहि, सके कोऊ धरनि
सहज निजु लगनि केवल सुनाए।
दोउ हितु जानि रति मानि अति, चल्ये संकेत आए ॥१॥

राग श्री

स्याम सलोने रूप मों, नैन रहे उरझाइ।
केवल सोभा निरखिकें, और न कछू सुहाइ ॥
साँवरी मूरति लाल, सखी भावे मुझे।
लटकत मटकत नैन, दिखावों चलो तुझे ॥
चलो तोहि दिखाँउ यह छबि, बरह सीसि सुहावना।
अधर बेनु बजाइ सम सुरि, ब्रज वधू मनि भावना ॥
पीत बासु सुबास सुंदर, बन्ये जिउ घन दामुनी।
बलि जाइ केवल निरखि यह दुति, चलत मद गज गामुनी ॥

अंग अंग सोभा बनी, (कछु) गनी न जावे मोहि।
केवल वेध्ये रस मुझे, सकों नही कहि तोहि ॥

अलकावलि धरि माथे, तिलकु बिराजहे।
बींदा बन्यो रसाल, देखि रवि लाजहे ॥
देखि सोभा होइ लज्जित, कोट दिनकर चंद्रमा।
निरखि कुण्डल श्रवन सोभी, गयो दुरि मन को श्रमा ॥
भौंअ धनुष बनाइ राख्ये, नैन बान चलावही।
बलि जाइ केवल निरखि यह दुति, धीर नाँहि धरावही ॥

रोम रोम अटकी सखी, जिनहू निरखी झाल।
केवल परबसि हो भई, हिरि लीनी नँद लाल ॥

अंजनु मनमथ गंजनु, अतिछबि पावहे।
नासा बेसर मोतो, लटकि लटकावहे ॥
लटकि मुकता हिर्‌यो तनु मनु, बिबसि प्रान हमारे।
अधर लग्यो तंबोल को रसु, चिबकु अति छबि धारे ॥
कंठि दुलरी पोत राजित, उर सोहे बनमाला।
बलि जाइ केवल निरखि यह दुति, हिरि लई ब्रज बाला ॥

धीर न आवे निरखिकें, सोभा नंद किसोर।
केवल मूरति माधुरी, चित बित के हैं चोर ॥

अंग अँग भूषन चारु, बिराजें स्याम के।
रिदि मों कौस्तुभ धारि, हिर्‌ये सुख काम के ॥
हिर्‌ये सुख सभ काम के प्रभ, अपरिमिति सोभा बनी।
काछनी अरु छुद्रघंटिका, कवन पै जावे गनी ॥
बजत नूपर करत रुणझुणु, यह सरूपु रिदे बसे।
बलि जाइ केवल निरखि यह दुति, मंद मंद हसन हसे ॥२॥

राग तुखारी

ब्रिंदाबन रस केल कों, चल्ये दोउ रस पुंज।
राधा लाल विलोकही, फूलि रही नव कुंज॥
पिक चातिक अलि गुंजही, सबद करत बहु मोर।
केवल तहाँ विराजही, नागर नंद किसोर॥

ब्रिंदाबन रस रास, रसिक दोउ खेलहीं।
नाना प्रफुलित फूल, मधुप मिलि केलहीं॥
मिलि मधुप करहि कलोल कौतक,
कोकिला कलि धुनि रटी।
सुनि मौर चातिक को कुलाहलु
चलन तें जमुना हटी॥
नवल कुंज समीर सीतल, मैन को तन पेलही।
बलि जाहि केवल जुगल छबि परि, मुदित रस रस झेलही॥

कुंज लता हितु जानिके, नवसत साजे अंग।
गोपीजन रस कारणे, करत परसपर रंग॥
रास मंडल आए दोउ, भुजा भुजा परि धारि।
केवल दूलह दुलहनी, महाप्रेमु विस्तारि॥

राधा लाल बिलोकि, कुंज हित राजही।
गोपीजन रस मंडन, नवसत साजहीं॥
तन साजि नवसत चली भामुनि, पीय भुज परि भुज धरी।
रस भर्ये आए रास मंडल, प्रेम पूरन रिदि भरी॥
ताल बेन मृदंग मुरली, साज बहुविध बाजहीं।
बलि जाहि केवल जुगल छबि परि, कोट मनमथ लाजहीं॥

रसिक बिहारी भामुनी, बिहरत हैं रस केलि ।
नाचत गावत प्रेम सों, राग रागिनी मेलि ।।
रुणुझुणु नूपर बाजही, थइ थइ वदत गुपाल ।
केवल खेल्ये भाँति बहु, द्रुम बेली बेहाल ।।
बिहरत रसिक बिहार, बिहारी भामुनी ।
लटकत गावत गीत, चलत गज गामुनी ।।
गज चाल चलत सुधंग नाचत, थइ थई नूपर रटें ।
रस केल कौतकु देखि सुरपति, नाक कों नहि फिरि हटें ।।
द्रुम बेल सहित अनंग मूर्छित, लटि गई सभ जामुनी ।
बलि जाहि केवल जुगल छबि परि, बन्ये जिउ घन दामुनी ।।

आए कुंज महल विषे, रस्ये उनीदे नैन ।
नवल कुअर नव लाडुली, सुख सिजा किओ सैन ।।
सोभा निरखत कोट इक, लज्जित होइ अनंग ।
केवल तहाँ बिराजही, लाल कुअरि के संग ।।
रस भर्ये उनीदे नैन, सैन कों आवहीं ।
सुख सिजा किओ सैन, मैन मुरछावहीं ।।
भए मूर्छित मैन निरखत, दोउ मूरति माधुरी ।
गौर साँवर नवल जोरी, कुंज मंदिर मै दुरी ।।
कनक लता तमाल द्रुम जिउ, उरझ उर लपटावहीं ।
बलि जाहि केवल जुगल छबि परि, परममोद बढावही ।।३।

राग रामकली

तजि हठु पिय सों भामुनी, गिरिधर लालु अधीन ।
बेगि चलो गज गामुना, तरफत बिनु जल मीन ।।
बिना जल जिउ मीन आतुर, स्याम तुम बिन इउ भए ।
पलकि ओट बितीति मानो, चारि जुग पूरनु गए ।।
बलि जाइ केवल प्रान प्यारी, महाचतुर प्रवीन ।
तजि हठु पिय सों भामुनी, गिरिधर लालु अधीन ।।

कुंज लता मों साँवरे, तुहि चितवत धरि ध्यानु ।
मैन चैन मुरछावही, दूरि करो रिस मानु ॥
तजि मानु सुनि बच (मोहि) हठीली, बेरि कब की हम भई ।
हटी अजहु न रिस तुमारी, रैन सकली घटि गई ॥
बलि जाइ केवल प्रान प्यारी, चलहु दीजे दानु ।
कुंज लता मों साँवरे, तुहि चितवत धरि ध्यानु ॥

दीन वचन सुनि लाडुली, मुसिक चली बन माँहि ।
प्रेम नेहु हितु जानिओ, उरझि मिल्ये दोउ ताँहि ॥
मिल्ये प्रेमु बढ़ाइ रस मों, केलि कौतकु बहु करें ।
रसिक लाल प्रवीन जोरी, रास मंडल हितु धरें ॥
बलि जाइ केवल प्रान प्यारी, कतहु सम कोउ नाँहि।
दीन वचन सुनि लाडुली, मुसिक चली बन माँहि ॥

खेलत मिलि दोउ रासु तहँ, भुजा भुजा परि धारि ।
बहुविध बजित्र बजावही, थइ थइ वदत मुरारि ॥
करत थइ थइ गान कौतकु, कुंज पुंज अनँदु भयो ।
(रस) केलि क्रीड़ा करी पूरनु, देखि मन को श्रमु गयो ॥
बलि जाइ केवल प्रान प्यारी, बदनु रोच निहारि ।
खेलत मिलि दोउ रासु तहँ, भुजा भुजा परि धारि ॥४॥

राग किदारा

तो सम को प्यारो नहि प्यारी ।
तन मन धन तुम प्रान लालके, ससि जिउ सुधा किरणि उजिआरी॥
जिउ दामुनि बिन घन की सोभा, तैसे तुम बिनु कुंजबिहारी ।
बेगि मानु तजि मिलहु लाल सों, जिय की जीवनि सोभा न्यारी ॥
तुम हो चतुर प्रवीनि लाडुली, रूप सिंधु सीवाँ न तिहारी ।
केवल रसि मिलु रसु उपजावो, उह नट्ट तुँ ब्रिषभान दुलारी ॥५॥

राग किदारा

प्यारी तेरो मुसिक मिलन पिय भावे।
मैन बैन तन उरझि तेरो जसु, कुंज भवन मों गावे ॥
वृथा मानु हठु कीओ हठीली, करहु जिवें बनि आवे।
तो सी त्रिया रची नहि रचना, विधि रचि पचि न सुहावे ॥
इंद बदनि तुम सदन सुधा को, सुख समूह उपजावे।
केवल चलहु मिलहु पिय भामुनि, बहुविध लाड लडावे ॥६॥

राग किदारा

मानुनि करहु मानु न एत।
बदन लव पट ओट दीएँ, स्याम मनु हिरि लेत ॥
बननि बनहि बनाउ जैसो, करहु तुमही तेत।
तजहु अंतरु लाल पिय सों, कहों कह्यो न जेत ॥
दीन मोहन पंथु चितवत, धारि मन मों हेत।
चलहु केवल दानु दीजे, रही कहि कहि केत ॥७॥

राग किदारा

सुनहु लालन पीय, प्यारी न टरत टारी
मन की टेव तिहारी, जानि रही सभ।
पाइन परती मोहि, हठु न तजत तोहि
कछू न चलत बलु, जावहु तुमही प्रभ ॥
साम दाम कहि भेद, दंड वच बिन खेद
रैन सकल गई, किरणि पसरी नभ।
केवल ऐसो है ठट्ठु, जैसो चिकनो घट्टु
जतन करत हारी, छिपत नाँहिन कभ ॥८॥

राग किदारा

ठाढ़ी है अंगन मधि, रसिक रसीली।
रूप सुधा की सीवाँ, छैल छबीली ॥
दरपनु कर लीनो, बदनु निहारे।
मानो मैन के जूथ, कोट इक वारे ॥
झूमक सारी तन, स्याम बीरी सोहे।
सुरि नर मनु हिर्‌यो, मोहिनी कों मोहे ॥
नासा मोती जगमग, महाछबि धारे।
अंजनु नैनन मानो, खंजन वारे।
भौंअ धनुष मधि, बिंदुला बनायो।
मानो रवि उदित, ससि घरि आयो ॥
कुंतल केसन मधि, माँग बिराजे।
मानो सिव की जटा, बीचि गंग राजे ॥
अंगि अंगि प्यारी छबि, बरनी न जावे।
केवल चलहु लाल, देखयें बनि आवे ॥९॥

राग किदारा

नाचत दोउ रास मँडल, थई थई तत थई
प्रेम उमड़ि रीझि रीझि, गावत सुरि थोरी।
इक तें इक गति सुढ़ार, तान मान सम बिहार
खेलत रस मै प्रवीन, राधिका किसोरी ॥
रुणझुण नूपर बिसाल, चलत है जैसी बाल
छबि देखत भ्रांति मैन, मनसा की तोरी।
भाँति भाँति करी केल, आनँद रस सिंधु झेल
केवल जुग जुग बिहार, ब्रिंदाबन जोरी ॥१०॥

राग किदारा

खेलत हैं मिलि रास रसिक दोउ, कुंज भवन महु बैठे ।।
लाल के बरह सोसि बिराजे, प्रिया की माँग महाछबि छाजे ।।
पिय कों पीत पिछोरी सोहे, भामुनि नीलांबर मन मोहे ।।
पिय के कुंडल कानि बनाए, प्यारी श्रवन तटंक सुहाए ।।
पिय के नैनन अंजनु दीना, भामुनि मोहे खंजन मीना ।।
पिय के नासा लटकत मोती, प्यारी बेसर जगमग जोती ।।
पिय को बदनु कवल की न्याँई, प्यारी ससि प्रगट्यो नभ माँही ।।
पिय के उर सोहे बनमाला, प्यारी नवसत हार बिसाला ।।
पिय के कटि काछनी बिराजे, प्रिया के छुद्रघंटिका राजे ।।
जुगल की अँगि अँगि छबि सोहे, देखत मनमथ को मनु मोहे ।।
छबि की उपमा कही न जावे, निरखत केवल जनु बलि जावे ।।११।।

राग किदारा

बार दोउ नव किसोर से बाल ।
तिन मों अतिसुंदरि इक रवनी, महामत्त गज चाल ।।
राम लछन तिनु नाम कहत है, जनक सुता जु रसाल ।
वाँ को सोभा ओभा सभ जगु, निरखत भए निहाल ।।
अंग अंग रुचि परत माधुरी, पंकज नैन बिसाल ।
नख सिख लो छबि उठत तरंगनि, हिरि लीनी मुख झाल ।।
पुरवासी नर नारि मोहित भए, गिरि गिरि परत बिहाल ।
केवल सरु तजि चल्ये हैं कहाँ कौ, त्रेता जुग के मराल ।।१२।।

राग किदारा

तुम चलि आवो गिरिधारी, महामानु किओ पिय प्यारी ।
मुख तेरे तें करी बेनती, रटत रटत हौ हारी ।।
श्रवनि न सुने चितु नही धारे, दुख पावे मन भारी ।
जब कब खिजि उपजी तेरे तें, अदभुत टेव तुमारी ।।
यह बच सुनि मोहन उठि आ मिलि, मान आपदा टारी ।
रास बिलास केल रस केवल, निरखि निरखि बलिहारी ।।१३।।

राग किदारा

मानुनी बिषई प्रिया किउ साजे।
बिधि सुत को सुतु ता की सुता सभ, नेकु दरस तें लाजे।।
जल सुत को पति तिसि पित को सुतु, तिनु प्रिय नीति न कीजे।
श्रोत सुती सुत पति सुति भेदन, तिनु प्रीतम सुखु दीजे।।
दधि सुतु जीवनि को सुतु ता सुत, तिनु अरि सों अकुलाने।
नीर पूत जल रिप करि आतुर, उन रस नेह बिकाने।।
पवन भच्छ धरि के सुत बहुविध, मुसकि चली तिनु माँहि।
केवल उमगि चल्ये पिय प्यारी, निरखि अघावत नाँही।।१४।।

यह एक कूट पद है। इसमें दूती राधाजी से मान छोड़ने के लिये कहती है और उनसे कहती है कि श्रीकृष्ण से मिलन हेतु जायें।

राग ललित

आवत कुंजन तें दोउ प्रात।
निसा बिहार सिथल मनमथ भए, अरुन नैन अरसात।।
श्रम जल बूंदि मदिध भौअन के, जनु मुकतावल (की) पाँत।
बीदा उभय भाल सरसी महु, हंस भच्छ कौ जात।।
अटपटि चाल परसपरि मुसकनि, कर सों करु लपटात।
केवलजन दामुनि घन आवहि, लीएँ प्रेम की बात।।१५।।

राग ललित

आवत मूरति मैन मानो, आवत मूरति मैन।
आरस बदन खिर्ये भूषन बस, महारगमगे नैन।।
कर मींझत अरु देत झँभाई, सिथल मधुर मुख बैन।
अदभुत छबि प्यारी प्यारे की, जिउ तारा ससि गैन।।
बहुविध कीओ (है) बिलासु निसा को, प्रगटि चिहन तेउ चैन।
केवलजन जोरी चितु चोरयो, रूप सुधा को ऐन।।१६।।

राग पूरवा

आजु प्यारी के संगि, रसिक राइ गुपाल ।
अतिछबि पावत गावत दोऊ, चलत चाल मराल ।।
करत बिहार बिलास रास मों, मान लेत करताल ।
केवलजन रसु वढ्यो (है) परसपर, द्रुम बेली बेहाल ।।१७।।

राग किदारा

मानुनी मान कीओ किह काज ।
रहत अधीन दीन मोहन जिउ, बाह गहे की लाज ।।
तू वाँ की सोभा संपति है, वह तव परमसमाज ।
केवल मुसकि मिलो श्री भामुनि, चलिए नवसत साज ।।१८।।

राग किदारा

हसत खेलत लालु आवे आली मेरो, हसत खेलत लालु आवे ।
बाँकी द्रिष्टि चपल नैनन गति, मुख मुरली धुनि गावे ।।
माथे मुकटु खोर चंदन की, कटि काछनि छबि पावे ।
तान मान में सरसु साँवरे, श्रीराधा मनि भावे ।।
अंग अंग रुचि परत माधुरी, निरखत टोना लावे ।
तन मन प्रान देत निहछांवर, केवलजनु बलि जावे ।।१९।।

राग मारू

नवल कुँअर ब्रिषभान को जसु कीजे ।
आई हों जाचन द्वार तिहारे, भलो दानु (मोहि) दीजे ।।
तीनि लोक सम को नाँहिन, मन को दुखु छीजे ।
नवल लाल दूलह सों, रस मों बसि लीजे ।।
छाड़ो हठु मानु प्यारी, इनु बातनि जीजे ।
केवल रस केल को रसु, पिय सों मिलि पीजे ।।२०।।

राग रामकलो

बचन कहत हौ हारी भामुनि, बचन कहत हौ हारी ।
सुने न बात श्रवन दे सजनी, अटिपटि टेव तिहारी ।।
करत वेनती बहुविधि मोहन, सरद प्रकासी जाम ।
केवल रास रसिक मिलि खेलें, द्रुम बेली विश्राम ।।२१।।

राग तलिंग

लाल को मनु हिरन (तू) पिय प्यारी ।
चतुर महाप्रवोनि सोभा न्यारी ।।
नैन मृग समानि खँजन लाजे ।
(तेरे) भूषन अंग अंग बिबिध साजे ।।
हंस गज लजाइ चाल तेरी ।
रतिपति मन भ्रांति सभ निबेरी ।।
नूपर रुणझुणु महाछबि पावे ।
साँवरो गिरिधर (न) लाल भावे ।।
सरद चंद्रिका बिमल (भई) उजारी ।
कुंज तलप स्याम हिति सवारी ।।
रास रस बिहार बेगि कीजे ।
केवल मिलु लाल कों सुखु दीजे ।।२२।।

राग कानरा

नवल लाल ब्रिषभान दुलारी ।
थइ थइ करत रास रस खेलत
इक तें इक नौतन गति न्यारी ।।
तान बँधान सपत सुर गावत
रीझत देखि सरद उजियारी ।।
केवल लाल तोरि त्रिणु बोल्ये
तो सम को नाँहिन पिय प्यारी ।।२३।।

राग कानरा

कुंज भवन मों जोरी बनी ।
स्यामा स्याम अंस कर धारत,
छबि उपमा कछु जावत न गनी ॥
हितु उपजावत बेनु बजावत,
मधुर मधुर सुरि धुनि जो ठनी ।
रीझि परसपर गावत कानरो,
गरजत (है) मानो दामुनी घनी ॥
सरद चंद प्रकासु, भयो है महाबिलासु,
उर परि हारु चारु सोभित मनी ।
केवल लालन प्यारी, सोभा जो बनी है न्यारी,
मैन चैन दलु जीतो हसत हसनी ॥२४॥

राग कानरा

प्यारी तेरो मानु मनावन आँई ।
रसिक लाल भेजी करुणा करि, बार बार परचो पाँई ॥
एतो हठु तुम कीओ उन सों, ऐसे बनत है नाँही ।
केवल पलक ओट तुमही बिनु, पीय व्याकुल मन माँहीं ॥२५॥

राग कानरा

तोही पैं लालु ले आँई ।
अजहू तें हठु तजहु न भामुनि, कैसे (के) तोहि मनाँई ॥
गृह आएँ आदर न चूकिए, समझि सोंच मन माँही ।
एतो मानु कीओ नहि कबहू, देख्यो सुन्यो न काँही ॥
तुम हो चतुर प्रवीनि प्रिया जिउ, बात करो रस भाँई ।
केवल रसि बसि मिल्ये मनोहर, आनँद उरि न समाँई ॥२६॥

राग गौडी

बिरहन ब्रज की नारी तुम बिनु ।
बिकल भई नहि रुचत ग्यान मनु, अहि निसु चाह तुमारी ।
सोंधा तेलु फुलेलु बिसरि गयो, गृह कारज सुधि हारी ।
सीसि दह्यो धरि पूछ घरो घरि, कब आवे वनवारी ।
तजि (रे) सिंगारु बिहार सुतन सों, महाप्रेम हित मारी ।
डोलत बोलत नहि सूधे मग, तन तें दीसे न्यारी ।।
रोम रोम रस बीधी ग्वारनि, पायो अवसरु भारी ।
केवल ब्रजि तुमही बिनु आतुरु, बेगि मिले गिरिधारी ।।२७।।

राग सूहव

निरखत ही मनु मोहि लीओ हरि ।
स्याम सरीर कवल दल लोचन, सोभा न्यारी नंद भवन धरि ।।
बिबसि भई चलि सघत नही पलु,
मनु उलट्यो न (ही) धरों कैसे धरि ।
माधुरि मूरति देखि भुलानी, गृह सुत भूले चितवनही करि ।।
महाप्रेम करि व्याकुल होई, चल्यो प्रवाहु उमडि नैनन भरि ।
केवल रूम रूम उरझानी, बिरह पीर सभ गई(है)महाजरि ।।२८।।

राग भैरो

जागहो गुपाल लाल, भोर मोर बोलें
ग्वाल बाल कौतक सों, आसिपासि डोलें ।
गौ बछ सबद करें, धीरज कों नांहि धरें
दूधु दुहो प्राननाथ, बंधन कों खोलें ।।
मथनी ले मथ्यो दह्यो, आछो नवनोत भयो
जागहो बलैया लेंहु, दासी बिनु मोलें ।
लीनें बलभद्र हाथ, उठे है श्रीगोपीनाथ
केवल (जन) सखा सों मिलि, आनंद मुख चोलें ।।२९।।

राग नट्ट

जोरी रास मँडल मधि साजे।
अंगि अंगि छवि उठत झकोरें, पूरन नवसत राजे ॥
ताल रबाब पखाउ किंनरी, भाँति भाँति सुरि बाजे।
थइ थइ करत सपत सुरि गावत, जमुना पुलिन बिराजे ॥
सरद रैन ब्रिंदाबन फूल्यो, रास बिलास समाजे।
केवल चतुर प्रवीनि नागरी, देखत मनमथ लाजे ॥३०॥

राग मलार

हो लाल माई खेलत इनु ब्रज माँही।
लरिका सवय संगि सत षट्ट दस, यह सुखु कतहू नाँही ॥
थोरी (थोरी) बूंद गँभोर घोर घन, मिलि ठाढ़ इक ठाँही।
पिक चातिक मौर बहु बोलत, गावत सभ मिलि ताँही ॥
लकुटो हाथि अस्व लकुटन के, संगि चरावत गाँई।
दूध भातु अचवत केवलजन, डोलत कुंजन माँही ॥३१॥

राग किदारा*

सारिंग[१] में राजित सारिंग सुतु, सखी हमारो बैरी।
सारिंग बिनु सारिंग उपजो तनि, दुखु उपजावत है री ॥
सारिंग तें सारिंग उपजानो, सारिंग कों ले दौर्यो।
सारिंग तें सारिंग सुतु कर मों, सारिंग सों ले बोर्यो ॥
सारिंग कों सारिंग ले आयो, सारिंगु मेरो छीजे।
सारिंगु वृथा जाई सारिंग बिनु, कहा कहा करि लीजे ॥
सारिंग मै सारिंगु अति उपजो, सारिंगु सारिंग चाह्यो।
केवलजन आए नँद नंदन, मिलत परमसुखु पायो ॥३२॥

---

* इस कूट पद में राधा या कोई अन्य गोपी अपना विरह व्यक्त करती है।

सारिंग (=सारंग) के अनेक अर्थ हैं। इस पद का अर्थ इस प्रकार हो सकता है--

(अर्थ -)

१. हे सखि जो काजल मेरी आँखों में लगा है, वह मेरा शत्रु हो गया है।

राग मारू

साँवरे गुपाल लाल, मनु हमारो लीनो।
मुरली बजाइ गाइ, टोनो कोउ कीनो ॥
लटपटी (सिरि) पाग सोहे, पीतांम्बर धारी।
लटकत गज मत्त चाल, निरिखि सुधि बिसारी ॥
सुंदर मुख सुभग स्याम, नेकु हसि निहार्यो।
नैन चपल भौं कमान, बिरह बान मार्यो ॥
लोक लाज कुल समाज, छाड़ि पाछें डोलों।
केवलजन एक बार, बाति खोलि बोलों ॥३३॥

नायक के बिना मेरे शरीर में काम विरह उदित हो रहा है और मुझे रुला रहा है। इन बादलों ने मेरे काम को उत्तेजित किया है, मैं अपने नायक से मिलने के लिये दौड़ूँ। आँखों से काजल बहकर मेरे हाथों पर लग गया है, मैं आँसुओं से भीग गई हूँ। जब बादलों में बिजली चमकती है, उस समय मेरे माथे पर लगे हुए चन्दन का प्रभाव अर्थात् उसकी शीतलता कम हो जाती है। नायक के बिना यह रात बेकार हो गई है, कहो, अब क्या किया जाये। आकाश में बहुत बादल छा गये हैं और चातक बरसात की इच्छा कर रहा है। केवल जन (कहता है कि) नन्दनन्दन के आने से परम सुख की प्राप्ति होती है।

'हैरी' सम्बोधनात्मक अर्थ के अतिरिक्त 'हैरी' (=हैली) भी हो सकता है जि.का अर्थ है 'हे अली, हे सखी'।

राग मारू

स्याम द्रिष्टि पर्‌ये सखी मेरे, स्याम द्रिष्टि पर्‌ये ।
मोहन मुख कवल कोस, मधुप नैन अर्‌ये ॥
चटको सी लागि रही, पगु न चल्यो जाई ।
अदभुत छबि अंग अंग, मधुरता सुखदाई ॥
काछनि कटि मुरली कर, बरह सीस राजे ।
निरखि प्रान बिबसि भए, बिसरि लोक लाजे ॥
पीत बसन हसन मंद, चितवन हिरि लीनी ।
केवलजन लाल ऐसे, मेरी गति कीनी ॥३४॥

राग मारू

ठगोरी लाई री बंसी ठगोरी लाई ।
कदम कुंज तरे स्याम, अधर धरि बजाई ॥
गोख छांड़ि निकसि चली, सुधि न परत काई ।
धुनि सुनि मनु अटकि रह्यो, बिरह भीरि पाई ॥
सूधे मग पगु न परे, बाँबरी सो डोलों ।
गृह पति मति भूलि गई, कानु कानु बोलों ॥
बेधी रस रोम, कहा कहों माई ।
केवलजन लाल मिल्यें, निरखि नैन सिराई ॥३५॥

राग भैरो

रैन के उनीदे नैन, मैन जिपि आए हो ।
आरस रसीले बैन, सिथल बसन चैन
मोतीअन लर तूटी, रस लपटाए हो ॥
अभ्रव मानो है स्याम, चपल सुभग भाम
प्रेमहू को बाति परो, निसु बरसाए हो ॥
अंस अंस बाहु जोरि, ठाढ़े दोऊ कुंज ओरि
केवल निरखि छबि, मनु मुरछाए हो ॥३६॥

राग पूर्याँ-कानरा

श्री मोहन लाल स्याम तमाल, मानु मनावनि आवत ।
कनक लता प्यारी, हीयरे तें नाहि न्यारी
काहे को एती रिसि उपजावत ।।
तुमही तनु मनु प्रान, तुमही सभ गुन निधान
सरबसु तुम तें कछू औरु भावत ।
केवल रसीली रसि, कीजीए अपुन बसि
तेरो प्यारो प्यारी तेरे गुन गावत ।।३७।।

राग किदारा

नूपर थई थई चाल ।
भामुनी के अँगि संगि, नाचत गुपाल ।।
रस [मों] प्रवीन मानो, जुगम है मराल ।
रुचिर चारु माधुरी मुख, परती है झाल ।।
भाँति भाँति सोभित छबि, नैन बर बिसाल ।
बजत है मृदंग बेन, मुरली दफ ताल ।।
करत केल रस बिहार, गावत ब्रज बाल ।
पसु पंखी निरखि बेलि, केवल निहाल ।।३८।।

राग बिभासो-तोदी

तुम प्रातहू कों आए, लाल निसु रसि बसि
उन अधरन पीक, नीकेही के जान्ये ।
सकुच बसन बैन, अंजनु खिर्‌यो है नैन
काहे कों चतुर होत, मुख अलसाने ।।
पल सों लागत पलु, उठत झंभाई जलु
तिनहू कों बसि कीजे, जाहू के बिकाने ।
केवल प्यारे पीय, जीय की जीवनि जोय
ता सों बाते जाहि ठगि, जिनहू ठगाने ।।३९।।

राग बिहागड़ा

जावो री जावहो ।
प्रिया बिनु हम आतरु जाहि, कहो आली मुख मेरे तें ।
सभ गोपीजन मंडल ठाढ़ी, रासु समौ आयो नेरे तें ।।
जाहि कह्यो प्यारी कों तरकि करी, गिरि परी है पेरें तें ।
केवल पीय उनही सों खेलो, सभ बातें जानी तेरे तें ।।४०।।

राग किदारा

कोनी है दीनता बहुरी पीय दीनी बोरी,
चितवत है तुहि स्यामा प्यारी ।
क्रिपा करो तजि मानु हठीली, एक सुनो निजु बात हमारी ।।
कुंज केल कों लुबधु भयो मनु, मगु हेरत पिय रसिक बिहारी ।
केवल तुम वह सुखु तजि भामुनि, वृथा मानु कीओ है भारी ।।४१।।

राग किदारा

जा सों भयो हितु ता कों दीजे, यह बीरी नहि कामि हमारे ।
तुम हम तें हम तुम तें छूटे, जत कत अटक्ये नैन तुमारे ।।
बुरी करोंगी जौ फिरि आई, जिहि सों भयो हितु तिपि सिधार्ये ।
केवल तुम नट और ठौर के, हम तेरे सभ घाट निहार्ये ।।४२।।

राग किदारा

चलहु बिहारी लाल, मानु मनावनि
[प्यारी] सघन कुंज मों, कीओ है महाहठु ।
लाडुली न माने कह्यो, रही हों पाँइन परि
देख्यो न सुन्यो, कबहू ऐसो टटु ।।
साम दाम कहि भेद, दंड बच [बिनु खेद]
छिपत नही [कबहू], जैसो चिकनो घटु ।
केवल सुभग प्यारी, टरत नाहिन टारी
ऐसे बच मोहि कहे, उलटि महासठु ।।४३।।

राग किदारा

भवनि आए (है लाल) चितवि प्रेम को मगु,
क्रिपा करो तजि मानु हठीली ।
विनु अपराध दोषु नहि समझो,
सभ गुन पूरन रसिक रसीली ॥
चोरु मेलि ठाढ़ो ग्रोवाँ मों,
केल करो उठि छैल छबीली ।
केवल प्यारे मिलि बसि कीने,
यह सुखु देखि काम गति ढीली ॥४४॥

राग रामकली

नंद को नंदा खेलत, नंद को नंदा ।
सखा मंडली मध्य बिराजित, श्री ब्रिदावन चंदा ॥
जमुना के तटि रासु बनायो, बरह सोसि लटकंदा ।
द्रुम बेली सभ भई प्रफुल्लित, बिगसि रहे मकरंदा ॥
बाजत ताल पखाउ किंनरी, सुरि गावत मँदु मंदा ।
थइ थइ वदत सभे गोपीजन, नाचत आनँद कंदा ॥
राधा रसिक बिहारी चितवत, पर्ये प्रेम के फंदा ।
केवल यह निजु सुखु देख्ये तें, बिसरि जाहि गृह धंधा ॥४५॥

राग रामकली

राधा सँगि रसिक लाल, खेलत [है] रस पुंजें
आसिपासि फूलि रही, ब्रिंदाबन कुंजें ।
अंस अंस बाहु धरें, रीझि रीझि उमडि परें
कुसमन की माला सों, भ्रमरा बहु गुंजें ॥
थइ थइ गान करत, मैन चैन नाहि धरत ।
चटकी सी लागि रही, नही ध्यानु मुंचें ।
भाँति भाँति करी केल, आनँद रस सिंधु झेल
प्रेम को प्रसादु पाइ, केवलजनु भुंचें ॥४६॥

राग तलिंग

आजु सखी मोहन देख्ये (मोहन देख्ये) पिय, सुंदर नैन बिसाल।
मुसकनि मोहि लई लागि रही चटको अटकी, तहाँ चलत गज चाल ॥
बरह सीस मुरली बाजे मुख, सुंदर सबद रसाल।
मृगमद तिलकु लिलाट दिओ है, स्याम सुभग तन झाल ॥
पीत वसन भूषन अँग अँग में, उरि मोत्यन की माल।
कटि काछनि नूपर बाजें पग, धुनि सुनि लजित मराल ॥
गृह कारज सुधि भूलि गई तन, निरखि निरखि छबि लाल।
केवलजन मनु संगि रहे हरि, सुनहो री ब्रज बाल ॥४७॥

राग किदारा

पौढ़्ये हैं सुख सों निसु, कुंज के सदन मों
अपुने लालन सों नवल पीय प्यारी।
अरसपरस ग्रीवाँ भुज सीवाँ
कुहू की निसा कों मानो, भई उजियारी ॥
कवल कुसम दल, तलप रची बिमल
राजित जुगल रस, रसिक बिहारी।
प्राची दिसा भई भोर, सकुनि बोलत मोर
जागि पर्ये स्यामा स्याम, कवल छबि न्यारी ॥४८॥

राग किदारा-दरबारी

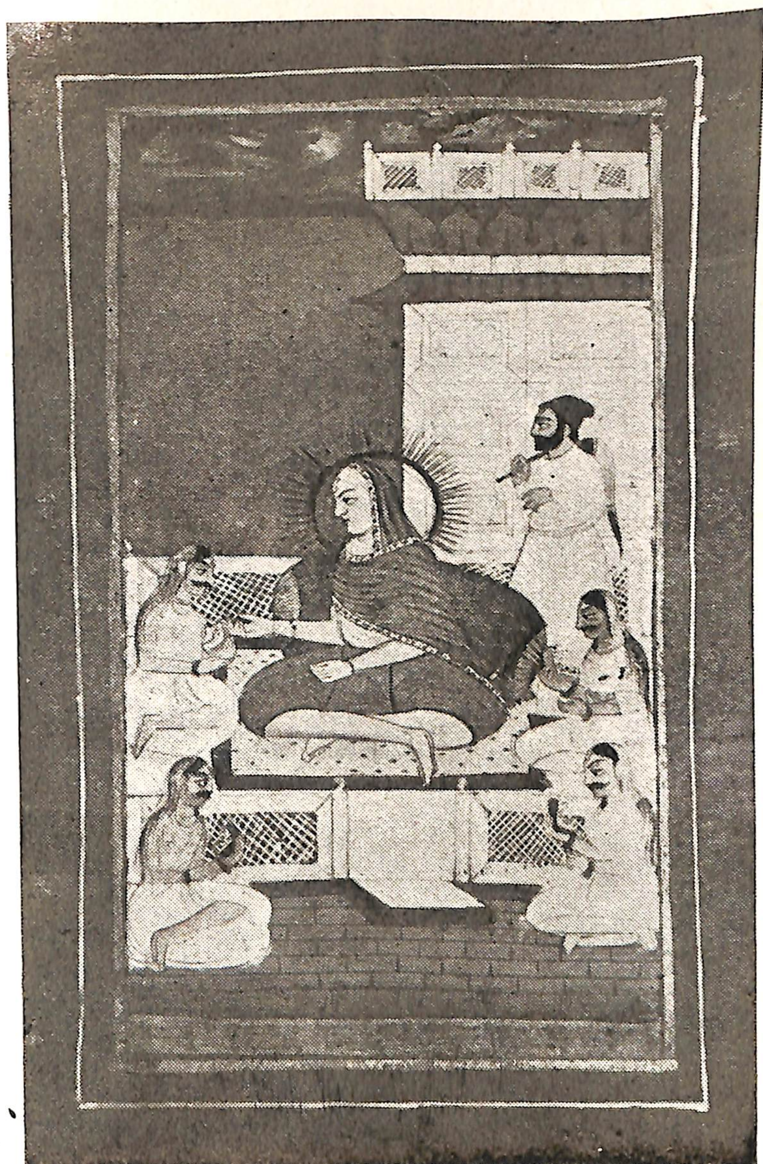
ओढ़ी पीरी (सुभ) सारी स्यामा, स्याम कों दिखावे।
मानो ससि सुमेर तें प्रगट्यो, मनमथ कोट लजावे ॥
रहे निहार छक्ये द्रिग छबि मों, पिय कछु और न भावे।
रूप सिंधु मों मीन मोहन मनु, पर्यो पारु नहि पावे ॥
कहा कहों अलि नेह अधिकता, वाही तें बनि आवे।
रहे बिकाइ लड़ेती के बसि, नयो नयो प्रेमु दिखावे ॥
सरवसु हिरि लीनो प्यारे को, जबहू मुरि मुसकावे।
केवलजन राधा माधोरति, कह को इक मुखि गावे ॥४९॥

राग हिंडोल

हरि प्यारे हरि प्यारे हरि प्यारे। जीउ
मेरो जीवन प्रान हमारे, हरि प्यारे जीउ ॥
पुलिक पुलिक मन इस्तति कीनी
सुधि बुधि चितवनि सों हिरि लीनी, इकु पलु नाँहिन न्यारे।
अदभुत सोभा स्याम सलोने
धीर धरावे रिदि मों कौने, इनु नैनन के तारे ॥
सुंदर नैन अरुण अलबेले
रस करि पूरनु हैं रस केले, बरह सीसि परि धारे।
श्रवनन कुंडल पीत पिछोरी
नासा बेसरि मुसकनि थोरी, सभ गुन पूरन भारे ॥
उर कौस्तुभ मणि अरु बनमाला
बेनु बजावे किंकनि झाला, अतिछवि पावें चारे।
सुभग काछनी नूपर पग मों
नहि सम सोभा जाने जग मों केवलजनु बलिहारे ॥५०॥

राग किदारा

अपुने ललन सों गहरु न कीजे।
कोट इंद सम वदन छबीली,
मुसकि बोलिचलु मोनि न लीजे ॥
डगरु निहारत बारत त्रिभुवन,
नैन लागि रहे उन सुख दीजे।
केवल बीती है निसु बिहारी जोउ सों रसि बसि जैसे,
तमचर की बानी न सुनीजे ॥५१॥



अष्टम गद्दी के प्रवर्त्तक तुलसीदास (लालजी) महाराज
तथा उनके चार पुत्र
(१६ वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल का एक चित्र)

राग बसंतु

स्याम सलोनो प्यारो, आजु बन्यो माई।
राजित नवल प्रवीन प्रिया सँगि, कछु मिति बरनि न जाई ॥
नव ब्रिंदाबन कुसम प्रफुल्लित, त्रिविध पवन सुखदाई।
खेलत तहाँ बसंत सरस रस, अँबिर गुलाल उडाई ॥
चोआ चंदन कुंकम केसर, छिरकत भरि पिचकाई।
इक दौरत इक खेलत नाचत, बंसी बजित्र बजाई ॥
रीझि रहे हिति प्रेम परसपर, कानन केल बढ़ाई।
केवलजन राधा माधो रति, निरखत रहे लुभाई ॥५२॥

राग किदारा

खेलत रासु बिहारी लाल, निर्तत चतुर ब्रज की बाल ॥
होदा होदी नाचें गावें, मोहन बेनु बजावें
प्रेम मुदित मानो, जमुना के कूलें।
रास मंडल बन्यो, बिधि रचि पचि ठन्यो
मानो सरोवर जुगम कंज फूलें ॥
मधुप इंद्रो लुभायो, उरझि रूप समायो
छबि के तरंग भए, मानो प्रेम झूलें।
केवलजन यह सुखु, निरखि जुगल मुखु
ठगोरी लागत मानो, गृह धाम भूलें ॥५३॥

राग किदारा

बैठी है छबीली प्यारी, रंग सों रंगीली
निसा बीती जागी भोर, कुंज मों दुलहनी ।
चंद की उजियारी कों, उजिआरी करि ढ़ारी
ओढ़ी इक ओढ़नी, बिनु बसि गहनी ।।
आभा पीय परि परी, अवर रिदहि धरी
चौप करि[1] उठी रिस, रिदहि न सहनी ।
केवल उठ्ये हैं लाल, भामुनी न बोले कैसे
कीनी है सपथ जब, मिल्ये रस रहनी ।।५४।।

राग तोदी

आजु रस रासु रचो रसिक पिय भामुनी लो स्याम ।
सरद ससि नक्षत्र, खचो प्रकासी जामुनी लो स्याम ।।
सरद प्रकासी परमबिलासी, कानन केलि बढ़ाई ।
गृह गृह तें गोपी सभ आई, बंसी स्याम बजाई ।।
कुँज लता बहु भई प्रफुल्लित, पिक अलि गुंजत मोर ।
केवलजन बलि जाहि निरखि छबि, नागर नंद किसोर ।।

कुसमन बीनि लीए ब्रिंदाबन गोपी लो स्याम ।
भूषन गूंथि कीए सकल गुन ओपी[2] लो स्याम ।।
सकल गुन ओपी परमहित रोपी, रिदि आनंदु बढ़ायो ।
देखि कुलाहलु हरषु भयो अति, जै जै मंगलु गायो ।।
नवसत साज बिराजित जोरी, रास मँडल की ठौर ।
केवलजन बलि जाहि निरखि छबि, नागर नंद किसोर ।।

---

१. 'चौप करि' का अर्थ 'थप्पड़ मारकर' या मौन रहकर हो सकता है ।

२. 'सकल गुन ओपी' का अर्थ हो सकता है 'उन्हें परिमार्जित किये' या कि 'उन्होंने उन्हें एक धागे में पिरोया' ।

बहुविध बजित्र लीए बजावन, लागी लो स्याम।
अतिसइ प्रेमु हीए सकल, अनुरागी लो स्याम ॥
सकल अनुरागी अधिक रस पागी, तान मान सुघराई।
बजत सँगीत गीत मुख गावत, कछु मिति बरनि न जाई ॥
करत बिहार सुघर घर नाचत दोउ महाचितचोर।
केवलजन बलि जाहि निरखि छबि, नागर नंद किसोर ॥

खेलत रासु तहाँ लाल संगि नागरी लो स्याम।
भयो है उलासु महामुदित, मन आगरी लो स्याम ॥
मुदित मन आगरि सोभा सागरि, सभ तें राधा प्यारी।
रस प्रवीनि रस फैल परचो तहँ, रमत संगि बनवारी ॥
सुर खनी चल अचल मार मन, लागि रही मन डोर।
केवलजन बलि जाहि निरखि छबि, नागर नंद किशोर ॥५५॥

राग सोरठि

नवल पोय लाल लड़ेती गाईए।
करत बिहार रास रस लंपट, कछु (मिति) बरनी न जाईए ॥
इक तें इक छबि अधिक चतुरता, सुंदरता सुखदाई।
ब्रिंदाबन मों राजित जुग जुग, परमहेतु लपटाई ॥
एक प्रान इक रूप देह दुइ, निजु क्रीड़ा करि लीनी।
लीला रसु समुद्रु फैलायो, सुनत सकल गति कीनी ॥
यह रसु रसिकन की रिदि राख्यो, बिमुखन कों रुचि नाँहो।
केवलजन जानत अनुरागी, के ब्रज भगतन माँही ॥५६॥

राग बसंतु

नंद दुलारो प्यारो ब्रिंदाबन माँहि।
खेलत बसँत मुदित राधा सँगि, यह सुखु कतहू नाँहि ॥
जूथि जूथि सभ चली गोपिका, चलो सखी तहँ जावों।
नँद नंदन ब्रिषभान सुता कों, निरखि नैन सुख पावों ॥
अँबिरु गुलाल उडावत गावत, बहुबिध बजित्र बजावें।
चोआ चंदनु कुंकम छिरकत, सहज बसंतु लडावें ॥
नाना विध फूल्ये द्रुम बेलो, त्रिविध पवन मिति नाही।
बहु चातिक अलि मोर कोकिला, कूँकूँ सबद सुनाही ॥
बिहरत जुगल किसोर रसिक रस, संगि सकल ब्रज नारी।
निरखि निरखि जै मंगलु गायो, केवलजन बलिहारी ॥५७॥

राग नटु

तत थइ नाचत नव गति न्यारी।
करत बिलास रास रस मोहन, संगि बिराजित प्यारी ॥
आसिपासि गोपीजन बिहरत, सरद रैन उजिआरी।
जमुना तटि बट कुंज प्रफुल्लित, ब्रिंदाबन सुखकारी ॥
बिहरत मुदित तहँ पिय भामुनि, बर बजित्र धुनि धारी।
उघटत गीत सँगीत सपत सुरि, सुखु उपजो रसु भारी ॥
यह छबि निरखि चक्रित सुर रमनी, मनमथ सुरति बिसारी।
जुग जुग राजित परमकेल रति, केवलजन बलिहारी ॥५८॥

राग कल्यान

कहा कहों री आजु, आए मेरे धाम।
करि का मिस लीएँ नँद नंदन
दूधु पीओ ढार्यो आंगन मै, संगि सखा बलराम ॥
जसुमति पैं जाईए माई, कहीए लरिका (की) भूख्यें फिरत
सुधि लेत नही, सदा करत यह काम।
केवलजन अब कछु न कहों करि, मष्टि रहोंगी जो फुनि आवत
गृहि पगु धारत गहि बाँधोंगी स्याम ॥५६॥

राग किदारा

आजु बनी लालन सँगि प्यारी।
रास मँडल मों बिहरत जोरी
जमुना पुलिन सरद उजियारी ॥
थइ थइ वदत मधुरि सुरि गावत
इक तें इक नौतन गति न्यारी।
अंग अंग छबि बरनि न जावे
उरपतिरप खेलत बनवारी ॥
ताल रबाब पखाउ किंनरी
भाँति भाँति अदभुत धुनि धारी।
भुजा भुजा सों रीझि परसपर
रस समुद्र फैल्यो अतिभारी ॥
द्रुम बेली सभ निरखि सिथल भइ
रतिपति की मन भ्रांति निवारी।
केवलजन दोउ रसिक सिरोमणि
हिरि लीनी चितवन बनवारी ॥६०॥

राग किदारा

नवल पीय पैं ब्रिषभान दुलारी ।
नेकु चितो करुणा करि सुंदरि, मगु जोवत ठाढ़े गिरिधारी ।।
सास उस्वास लेत रस लंपट, मैन चैन तन सुरति बिसारी ।
तुहि मुख बिरह बिओग अनमने, मुसकि मिलो जावों बलिहारी ।।
सरद उजारी कुंजबिहारी, रचि पचिकें तहँ तलप सवारी ।
केवल (लड़ेती) मानु तजि (मोहि) दीजे दानु
तुम उन सों कैसे बनत (न) न्यारी ।।६१।।

राग पूर्या-कानरा

आजु दोऊ बन्ये राजित
मुख की निकाई माई कही न परत ।
आजु लो न कहू देखी, उपमा छबि विसेषी,
मरकत मणि मानो, कंचन जडत ।।
कहू[1] निसा भोर होत, बिहरत ओतपोत
नैनन सों नैन चैन, भुजा सों भुजा धरत ।
केवलजन रसीले प्यारी के बसि बसीले
रहत केल सुखु, कुंजन करत ।।६२।।

---

१. 'कहू निसा' –सम्भवतः मूल पाठ में "कुहू निसा" था जिसका अर्थ 'अमावस्या की रात्रि' है।

राग बिभासी-तोदी

निसु के उनीदे नैन, जाग्ये पीय प्यारी संगि
भल्ये हो भल्ये हो लाल, नीकेही सों आए।
साँवरे सलोने घन, बरष्ये रस कुंजन
दामुनि भामुनि साथ, मिलि चैन पाए॥
तेरी चतुराई काई, छानी नाँही मो सों कछु
भोरही आवनु कीनो, किनहू सिखाए।
केवलजन सुजान, कपटी हो कारे कान
ताही पें सिधारो जाँ के, हित ललचाए॥६३॥

राग जिजवंती

लोचन निहारे लाल, अरुन उनीदे रस
जान्ये हो पैछान्ये पीय, भामुनी सों जाग्ये हो।
करत बिहार मार तूटे, लर जान्ये मोहि
अधरन पीक लागी, अंजन सों दाग्ये हो॥
हसन लसन मंद, अलबेली छबि सोहे
पल सों न लागे पलु, नए हित लाग्ये हो।
प्यारी बसि परधे स्याम, लूट्यो मनमथ गडु
केबलजन हो बाँ के, उनही सों पाग्ये हो॥६४॥

राग जिजवंती

स्याम सलोनो प्यारो, नंद जीउ को नागरु
जगत उजागर प्यारी चाहत कुंजन मै।
रटत रहत राधा, पल सों न लागे पलु
काहे कों मुनि ले बैसी, अपुने भवन मै॥
करहु तुमारी सोंस, उन के मन की सभ
सुधि बुधि हिरि लीनी, कंचन से तन मै।
केवलजन लडेती, मानु तजि बेगि मिलु
धारो चितु बलि जावो, पीय के गवन मै॥६५॥

राग कानरा

ठाढी कुंज भवन दुरि चितवत पीय
प्यारी छबीली छबन ।
सदद रैन उजारी, स्याम सारी प्यारी तन
हिरत न सुधि परे, निसा है कवन ।।
हित भाइ जानो तहाँ, मानो ठकुरानी राधा
ललिता बुलाए बच, सुन्ये है (पीय) श्रवन ।
केवलजन लडेते, लाल लाडुली सों मिल्ये
करत बिहार सुख सीतल पवन ।।६६।।

राग हिंडोल

ब्रिंदाबन रास बनाई मोहन, ब्रिंदाबन रास बनाई ।
जमुना तट बट कुसम प्रफुल्लित, कछु मिति कही न जाई ।
ब्रजपति लाडुले हो, ब्रिंदाबन रास बनाई ।।

पिक चातिक अलि मोर कुहंके, सरद रैन उजिआरी ।
सीतल मंद सुगंध पवन वहे, तह ठाढे गिरिधारी ।
मुरली धुनि कीनी हिरि लीनी, ग्रिह ग्रिह तें ब्रज नारी ।।

भाँति भाँति आई ब्रजवासनि, हरि दरसन की प्यासी ।
उलटि कीए भूषन अँग अँग महु, छाड़ि लोक कुल फासी ।
रमत निसंग सुभग कानन महु, आइ मिली अविनासी ।।

करत बिहार बजावत गावत, भाँति भाँति धुनि धारी ।
स्याम मुकट मणि आगर नागर, सभ तें राधा प्यारी ।
तत थइ तत थइ तान मान महि, नूपर की झुणकारी ।।

अंस अंस धरि भुजा परसपर, नैन नैन के माँहीं ।
नाचत खेलत करत कुतूहल, अतिरसु उपजो ताँही ।
सुर रमनी जैकारु करत बहु, यह सुखु कतहू नाँही ।।

द्रुम बेली सभ निरखि सिथल भइ, मनमथ ताडी लागी ।
अटकि रही जोरी की छबि महि, गोपीजन अनुरागी ।
यह लीला देखी रिदि लेखी, केवलजन बडभागी ।।६७।।

राग ढोला

कनैए चेटकु लाया ।
स्याम सरीर कवल दल लोचन, माथे मुकटु बनाया ॥
कुंतल कच मकराक्रित कुंडल, भाल तिलक अति सोहे ।
भौं [अ] भनुष धरि नैन बान सों, मनमथ को मनु मोहे ।
मंद हसनि बस पीत फबे अँग, सुँदरता सुखदाई ।
लोल कपोल अधिक बनी आभा, कछु मिति कही न जाई ॥
मुखि मुरली धुनि हिरि लीनो मनु, ग्रिह तन सुरति भुलानी ।
निरखि निरखि छबि अटकि रहे द्रिग, बिनु मुल मोलि बिकानी ॥
नासा मोती जगमग जोती, दुलरी कंठ बिराजे ।
भुजा मृणाल खोर चंदन को, कटि काछनि अति राजे ॥
अँग अँग भूषन सोहे मोहे, पग नूपर झुणकारा ।
चरन कवल तहा मधुप केवल (जन), इक पलु होइ न न्यारा ॥६८॥

राग किदारा

रैन रीझी री माई, देखत हरि को रासु ।
जमुना थकित भई द्रुम बेली, सभ चल फुनि अचल अकासु ॥
पिक चातिक अरु मोर सकुनि बहु, आलि अटक्ये तजि बासु ।
करत बिहार सरस रस दोऊ, उपजो महाहुलास ॥
आसिपासि गोपीजन ठाढी, पिय प्रिया करत बिलासु ।
केवलजन मनमथ मन मोह्यो, जोरी प्रान विस्वासु ॥६९॥

राग गौड़ी

अहो पीय लाल लडेती गाईए, ब्रिषभानसुता नंद नंदना ॥
सोने की सी बेलि मेलि लई, स्याम सुभग तर संग ।
अदभुत छबि लपटी चपटी सखी, गौर साँवरे अंग ॥
नैन कुसम मिलि नैन कुसम सों, जुग अलि करत बिहार ।
बास सुबास रूप महु उरझे, लागि रह्यो इक तार ॥
उभय पाण साखा सों साखा, उरझि सुरझि नहि जात ।
रोमावली पत्र पल्लव बर, झुलत प्रेम की बात ॥
सुभग तुचा अदभुत बस पहिरचे, फुल भूषन सुभ झाल ।
हित जल सों लटक्ये टह्क्ये[1] सखी, सुन्दर सरस बिसाल ॥
दुइ मन खग तह लीन परसपर, राजित नित्य बिलास ।
सोभित गंधु सुगंधु फैल परी, सभ बन कीए सुबास ॥
बोलत मोर किंकनी नूपर, रहत मूल के माँहि ।
पिक चातिक पी(य) पी(य) धुनि उपजत, यह सुखु कतहू नाँहि ॥
रास मँडल बारी न्यारी छबि, अति करि सोभा देत ।
जुगल सरूप अनूप बन्ये तह, निरखत मनु हिरि लेत ॥
बजत बजंत्र घोर घन बन मों, बरषत धारा फूल ।
करत बिहार रास रस दोउ, नट जमुना के कूल ॥
सरद उजारी मनमथ तारी, लागि रही छबि देखि ।
सुर रमनी चढि नभ बिबान महु, सम होई चित्रलेखि ॥
अपर अपार परमसुखु बिलसत, कछु मिति कहनु न आइ ।
निरखि निरखि जोरी चितचोरी, केवलजन बलि जाइ ॥७०॥

---

१. 'टह्क्ये' टसकना का रूपान्तर हो सकता है जिसका अर्थ होगा 'लीन हो गये' परन्तु क्योंकि लिपिकार कभी-कभी 'ट' वर्ण के लिये 'ड' या 'ठ' वर्णों का प्रयोग भी करता है; इसलिये इसका अर्थ हो सकता है 'डहके' (=छिड़के) या 'ठहके' (=पुकारे)। संवत् १८७४ वाली प्रति में 'टहर्‌ये लिखा है ।

राग किदारा

नवरंगो हो त्रिभंगी मोहन आउ घरे ॥
रैन दिवस मो कों नीद न आवे, तरफत जिउ जल मीना ।
बीती अवधि कहाँ रहे मोहन, बिरहिन कों दुखु दीना ॥
ग्रिह बन बीथुन पूछति डोलों, कब आवे ब्रज माँही ।
पीउ हमारा साँवरि मूरति, बिन देख्ये सुखु नाँही ॥
प्रान हमारे श्री हरि प्यारे, चंदु निहारे माई ।
एही चंदु हमही फुनि देखत, निरदय कहत न काई ॥
भले भले भोजन कौए ढारो, आवनु आवनु बोले ।
जूछि रही बामन की पोथी, अवधि न कोई खोले ॥
दूध दही माखनु मेरो अचवत, इनु देखत दुखु पावों ।
नंद दुलारे विनु मनमोहन, औरु न किसी पिलावों ॥
नंद जसोदा नित मगु चितवत, कब आवें वनवारी ।
कुबजा के बसि निठुर भये हैं, चोंप न करत हमारी ॥
आए दूलह मंगल गाए, ग्रिह ग्रिह भई वधाई ।
केवलजन हरषत ब्रजवासिनि, मिलि मन तपति मिटाई ॥७१॥

राग किदारा

मोहन लाडुले रंग भीने ।
बन्ये ठन्ये राधा प्यारी सँगि, हिलि मिलि रसि बसि कीने ॥
सोभा सागरि नागरि अँग अँग, मुसकि निहारि अपुन कर लीने ।
डोलत बोलत पाछें आवत, प्रेम सुधा रस पीने ॥
छवि रस मत मधुप नंद नंदन, बारत देखि भुवन सुख तीने ।
रास विलास बिराजित जुग जुग, केवल आनँद दीने ॥७२॥

राग किदारा

रीझि रीझि रही है, सरद को चांदनो
भई है छिमासी रैन, प्यासी दरसन की ।
बनी है नवल जोरी, लाल संगि राधे गोरी
खेलत रास बिलास, रति परसन की ॥
बिहरत चऊ ओर, सुघर साँचुरी सभ
कुसमन गोद भरि, छवि बरषन की ।
कुंजन मों कीनी केल, भाँति भाँति रसु झेल
केवल परी है टेव, मैन तरसन की ॥७३॥

राग किदारा

रीझि बिकल तन प्रेम सों हो प्यारी स्याम अंस परि
मानो अहि चंदन तर लपटे
पीय जुग भुजा पकरिके जकरि ॥
कुहू की निसा मों (मानो) प्रगटि भयो
ससि भान कमल (दुइ) दृगन संगि धरि ।
स्याम चकोर भोर तजि केवल
चंद किरणि द्रिग रह्ये छबि अरि ॥७४॥

राग कानरा

प्यारी जोउ के रूप को चटपटो परी
स्याम बिकल तन बन में डोलत ।
बदन की झाँई देखि, गाँई कहू भूलि गई
बाँसुरी कामरी गिरी, सुधि जो बिसरी ॥
हंस गज गामुनि दामुनो सी भामुनि
स्याम घटा चितवत मानो रिढि ध्यानु धरी ।
केवल लाल बिहाल, हितु जान्यो दुलहनि
कुंजन मों मेलि लीए ललिता (जिउ) रस भरी ॥७५॥

राग कानरा

हो रसीली अखीयाँ उनीदी भई
अरुन चपल छबि देखी जो नई ।
गई निसु बीति सभ खेलत कुंजन मों
अंग अंग रस भरी रति जो लई ॥
दीरघ ढरारी भारी, अंजन सों दुति धारी
बिधि रचना तें न्यारी, पीय हित सुखदई ।
केवल बदन सर, मानो जुग कंज फूल्ये
स्याम अलि अरचे सुधि, भूलि जो गई ॥७६॥

राग किदारा

सदन मों ठाढ़ी घटा सी, सुंदरि नवल किसोरि ।
अंग अंग छबि चपला जैसे, भामुनि राजित हैं चहू ओरि ॥
बदन चंद तरे जात, फुनि फुनि तहा प्रगटु होत
अटकि रहे मेरे नैन, सकति न छोरि ।
केवल सलोने लाल, प्यारी कों निहारि लीजे
ढारहुगे तिनु तोरि ॥७७॥

राग गौड़ो

बन तें आवत लालु री माई ।
कर फैटो ले गाईयन पाछें, धोरी धूमरि लेत बुलाई ॥
कटि काछनि बर बस धूसर कच, माथे लटपटी पाग वुनाई ।
मोर पँखु लटकत मटकत सखी, नैन चपल सदर सुखदाई ॥
मृगमद तिलकु कानन मै कुंडल, उरि मोत्यन माला छबि पाई ।
अँग अँग छबि निरखत केवलजन, मनु अटक्यो मुरली जो बजाई ॥७८॥

राग किदारा

सुघड़ राइ बैठे सुख सों कुँजन ॥
प्यारी प्यारो चंद की चांदनी मै गावत
प्यारो लगत हिलि मिलि रसु रह्यो मगन लगन ॥
करत विलास हास अतिछबि पावत बेनु बजावत
नैनन सों नैन दुति, अधिक बदन ॥
केवल नवल जोरी, निरखत चितु चोरी, ठगोरी परत
मनमथ मनु मोह्यो, अवर कवन ॥७९॥

राग मलार

ए घन घोर गाजे मानो इंद्र के मृदंग बाजे ।
नए (नए) बादर आए सकल सुर, पवन सजल दामुनी राजे ॥
पीत अरुण हरित मानो रेखा, पतनी संगि नवसत साजे ।
केवल प्यारी (जीउ) लाल कों दिखावत
बिहरत ब्रिंदावन बिराजे ॥८०॥

राग किदारा

तेरे सिरि कच गुँथित ऐसे भामुनि
मानो अलि मिलन कुसम चलि आए ।
यह तो देखी नई रीति प्रीति
जो ससि की भई नैन सरोज संगि उरझाए ॥
बेसर मै चूनी मुकता दुइ
मानो चकोर धाम प्रिय पाए ।
ऐसी छबि तो कों सोहे तेरी सों पीय प्यारी
केवल उजारी दुति मदन कों लजाए ॥८१॥

राग कानरा

कहा कहों कछु कहनु न आवे ।
तेरी सों वृषभान नंदिनी
तव मुख सम छबि चंदु न पावे ॥
छिन छिन मों दुरि जात घटा महि
निकसत पैसत हेरि लजावे ।
त्रिभुवन महि तो सी है तू ही
केवल रतिपति कहा कहावे ॥८२॥

राग कानरा

देख्यो चंदु हिंडोले झूलत माई ।
चतुर प्रवीन नाइका प्यारी
अँग अँग छबि किछु बरनि न जाई ॥
आगें पाछें किरणि साँचरी
कुँजन कुसम नक्षत्र सुखदाई ।
यह सुखु निरखि निरखि केवलजन
स्याम चकोर चटपटी लाई ॥८३॥

राग किदारा

चारि वरि चुरीयाँ जुरीयाँ कर प्यारी ।
मुँदरी अंगुरन महि, बाजुबंद गजरे
झाबे मखतूल के अति सुखकारी ॥
कसुँवे की सारी अंगीया लाहगो अतिलस को
मुत्यन को हारु बेसर सादी छबि धारी ।
केवल लाल गुपाल, देखि देखि रीझि रहे
उजारी तें उजारी है, ब्रिषभान की दुलारी ॥८४॥

राग माली गौड़

मेरे कानूया जिउ तेरे, नैन अरुण रस भीने ।
मेरे कानूया जिउ सभ निसु, प्यारी जिउ वसि कीने ॥
वसि कीने पिय प्यारी अपुने, रंग महल मों जाग्ये ।
तूटे बंद काम दल फोड्यो, अधरन अंजन लाग्ये ॥
मन भावत सभ कीए कुलाहल, भाँति भाँति रस लीने ।
मेरे कानूया जिउ तेरे, नैन अरुण रस भीने ॥

मेरे कानूया जिउ तेरी, सुँदरि सेज बिछाई ।
मेरे कानूया जिउ चोया, चंदन फूल बनाई ॥
चोया चंदन फूल बनाई, सीतल पवन झकोरें ।
सभ रँग मानि उठ्ये पिय लालन, भोर भए तिह ठोरें ॥
सभ गुन भारे कारे प्यारे, अँग अँग महु चतुराई ।
मेरे कानूया जिउ तेरी, सुँदरि सेज बिछाई ॥

मेरे कानूया जिउ कंचन, दीपक जोति उजारी ।
मेरे कानूया जिउ राजित, श्री ब्रिषभान दुलारी ॥
श्री ब्रिषभान दुलारी राधे, नवसत साज बनाए ।
उत्तम बस भूषन पहिरचे अँग, ससि तें अतिछबि पाए ॥
निरखि निरखि तह उन रस भीने, मुख की रोच निरारी ।
मेरे कानूया जिउ कंचन, दीपक जोति उजारी ॥

मेरे कानूया जिउ युग युग, करो बिलास मुरारे ।
मेरे कानूया जिउ जोरी, जीवनि प्रान हमारे ॥
जीवनि प्रान हमारे जोरी, निरखि निरखि सुखु पावों ।
जिउ भावे तिउ करो कुतूहल, कोटि वार बलि जावों ॥
केवलजन चरनों रज वांछत, नहि पलु होवों न्यारे ।
मेरे कानूया जिउ युग युग, करो विलास मुरारे ॥८५॥

राग नटु

ठाढ़ी है मंडल जोरी, नवल लाल किसोरी
अतिसें छबि पावत, गौर साँवर तन।
बिहरत चहू ओर, सुघर चतुर सखी
सोभा को सागरु फैल्यो, सुभग ब्रिंदावन ॥
नाचत गावत गीत, तान मान ले संगीत
तत थेई नई नई, गति जो सुनी श्रवन।
केवल देखत रासु, भयो जो महाबिलासु
सुख को समूह देखि, ठगोरी परत मन ॥८६॥

राग पूरबा

बोलत मीठी सी बानी ततुरानी
लाल संगि राधा जीउ बन में।
प्रथम समागमु कीनो लजीली सी अखीयाँ
सकुचित कछु इक मन में ॥
चाहत बिहार स्याम रस लंपट
नव वै कोमल तन में।
केवल अंग अंग जोरी बैठे इक ठोरी
मानो लसत दामुनी घन में ॥८७॥

राग पूरबा

ए करताल बजावत गावत पीय संगि
तत थेई थेई गति न्यारी।
सुघर राइ नट कों नचावत (दिखरावत) दुलहनि
नई नई तान(न) हितकारी
तान मान संगीत सिखावत [दिखरावत]
सुघर चतुर स्यामा प्यारी।
केवल निर्तत लाल विलास बिमल बिधि
भल्यें भल्यें भल्यें गिरिधारी ॥८८॥

राग पूरवा

कुँजन मै पोढी सुख सों निसु
हो प्यारी मोहन लाल जगाई ।
आरस युत अँगरानी, ठकुरानी सी राधे
बदन जोति सुहाई ।।
चिबकु चारु गहि पीय चितावत
बात करत रस भाई ।
केवल तब मुसकानी, रति मानी परसपर
बैठे हैं इक ठाई ।।८९।।

राग किदारा

मेरो मनु मोहन तेरी सों तू प्यारी ।
माथे (को) जराउ बेसरि भूषन सभ
तेरे संगि सोभित अतिदुति धारी ।।
तव मुख समि नही कोटि मैन रवि ससि
बपुरे की कहा है उजारी ।
केवल तन मन धन सरबस तुम
तूँ नागरि जीवनि हो हमारी ।।९०।।

राग कानरा

पीउ प्यारी कों निरखत चहू ओरि ।
तह तह नवल प्रवीन प्रिया जिउ, राखत है अंचर पटु जोरि ।।
हितु उपजावत प्रेमु बढावत, सुघराई की अवधि किसोरि ।
केवल तिहि बसि परचे साँवरे, नैन अधीन लागि रही डोरी ।।९१।।

राग किदारा

मुरली नेकु बजाइ हो प्यारे पीय, मुरली नेकु बजाइ।
मुरली तेरी सकल जुग मोह्यो, मीठी तान सुनाइ ।।
इनु बाँसुरी महि कहत कोऊ टोनो, सभ मनु लेति चुराइ।
केवल अधर धरी, लाल हित रस भरी
लिए त्रिभुवन मुरछाइ ।।६२।।

राग कानरा

मोहन लाल सों नेहरा लग्यो।
देख्यें बिनु कलि न परे, चटकी सी लागि रही
प्रेम फंद परचो आली माथे को सेहरो मेरो मनु जो ठग्यो ।।
मुसकनि हिरि लीनो, तबही अपुनो कीनो
परी है ठगोरी सिरि, रोम रोम हितु जग्यो।
केवल बिकानी आली, दस दिस जानी मानी
लाज तोल जानी पीय सों, जीयरो पग्यो ।।६३।।

राग किदारा

कहा कुँजन मै प्यारी खरकतु है।
जौ ललिता हम चतुर तिहारे संगि
बरहा की परछाँई परतु है ।।
कहा सुधि पाई न जानतु नागरि
हम नही देखी किनु कह तें सुनतु है।
केवल जानी है बात, आए हैं संकेत भए
तेरी तो मै चेरी राधे, मो सों न दुरतु है ।।६४।।

राग पूरवा

आजु काहे न कह्यो ललिता मो सों री
मोहन रासु बनायो ।
तुम सुधि पाई बिहान की मै जानत हों इउ
सकुचित नाहि सुनायो ॥
जमल उजारी अतिछबि धारी
याही तें लखि पायो ।
केवल चतुर प्रवीन प्रिया (प्रोतम) सँगि
हिलि मिलि रसु उपजायो ॥६५॥

राग किदारा

बन्ये रास मंडल पिय प्यारी
ललितादिक सँगि ब्रज नारी ।
तैसेहीं ब्रिंदाबन प्रफुलित
कदम कुँज तर छबि न्यारी ॥
सीतल मंद सुगंध पवनु बहे
सरद रैन तह उजिआरी ।
नाचत गावत झूलत हिंडोरें
केवल रसु फैल्यौ भारी ॥६६॥

राग कल्यान

बरहा की लटकनि मै आली
अटकी (रही) मोरी अखीयाँ ।
अलि (जैसे) उड़ि (जो) परी पंकज मुख ऊपरि
कैसे रहत नहि रखीयाँ ॥
उरझि रही छबि मै नहि निकसत
बहुरि न आवत लखीयाँ ।
केवल इक टक लागी ललचानी (लाल संगि)
रूप सलोनो चखीयाँ ॥६७॥

राग किदारो

ठाढे कुँजन की छाँउ
भुजा गहि झुलवत परसपर, राधा मोहन नाँउ ॥
रस भरचे अंग अंग मधुर मुसकनि, निरखि नाहि अघाँउ ।
रही छबि महु उरझि केवल, लटिकन परि बलि जाँउ ॥६८॥

राग कानरा

मोहन लाल सों हसि मिलु चलु मान जिन करहु प्यारी ।
कँज भवन सुखु दीजे अपुनो करि लीजे
बेनती मानो हमारी ॥
उह तेरो तुम वाँ की जीवनि करहु बिहार
बनत नही न्यारी ।
केवल तब मुसकानी उरझानी लाल संगि
निरखि (निरखि) बलिहारी ॥६६॥

राग किदारा

बैठी है झरोखे प्यारी, कुँज भवन मों
महलु न पावे पीय, ठाढे दरसन कों ।
उजारी तें उजारी माथे, माँग सोहे गंगा जैसे
जानी हरि भए अतिहेतु परसन कों ॥
जानी है बाति गुर भई ललिता जीउ
ल्याई हैं लालु तहाँ, निधि बरसन कों ।
मिल्ये है मोहन राधा, केवल छबि अगाधा
मेट्यो है दोउ उर काम तरसन कों ॥१००॥

राग बिभासी-तोदी

काहे को आए हो कान्ह, भोरही प्रगट्चे भान
रस बस्ये वा सों आजु, छान्ये न रहत ।
बसन अवर कीए, चिहन दुराइ लीए
उनहू तें आगे तेरे, नैना जो कहत ॥
अलसाने अंग अंग, भल्यें जी भल्यें त्रिभंग
बोलत सिथल बच तन कों दहत ।
केवल मोहन लाल, हम नही ऐसी बाल
ताही पै सिधारो जा, कों चाहत चहत ॥१०१॥

राग पूरवा

वह देखो आवत पीय संगि, मुकट मणि स्यामा जी प्यारी ।
अंग अंग दुति छबि न्यारी सुखकारी परसपर
नवसत[1] सहज सिंगारी ।
मानो कंचन मणि मरकत मणि उरझे
भुजा भुजा परि धारी ।
केवल हंस गज गामुनी जोरी अतिप्रमुदित
नूपर की झुणकारी ।१०२॥

---

१. नवसत सहज सिंगारी—लगता है लिपिकारों ने 'साज' के स्थान पर 'सहज' का प्रयोग किया है ।

राग नटु

(माई री) साँबरे मोहन संगि ब्रिंदाबन, राजित नवल किसोरी।
नख सिख लो छबि ऊठत झकोरें, भुजा परस्पर जोरी ॥
बिहरत रास बिलास पीय सँगि, श्री राधे तन गोरी।
नाचत गावत करत कुतूहल, चितवत है मुर मोरी ॥
बाजत ताल पखाउ एक रस, मुखि मुरलो धुनि थोरी।
सरद रैन केवल सुखु उपजो, लागि रही मन डोरी ॥१०३॥

राग किदारा

पीय साँवरे के संगि, बनी बिहारिनि अतिछबि पावे।
नवसत साजे अंग, सुभग छबि तरंग
निरखत मोहिनी लजावे ॥
बदन इंदु लजाइ, मोहन रहे लुभाइ
खेलत रास मंडल, अतिहितु उपजावे।
केवल बनी है जोरी, नवल राधा किसोरी
देख्यें रतिपति मुरछावे ॥१०४॥

राग किदारा

सुंदर सुभग मुखु, देख्ये तें न रहे दुखु
पीय पहि चितवि चुखु, रुखु धरि प्यारी।
वेनती सुनो किसोरि, मानु तजि भई भोरि
अंजनु नैनन कोरि, बनी छबि न्यारी ॥
सोभा को सागरु भाम, सुख को समूह धाम
रतिपति कौने काम, ससि तें उजारी।
केवल मिलहु पीय, श्री राधे जीवनि जीय
काहे कों मौनि ले कीय, चाहत बिहारी ॥१०५-१॥

राग रामकली

देख्ये सखी राह दुइ ससि चारि ।
संगि अठदस कवल सोभित, करत जुगल बिहार ।।
चह ओरि अलि कुल आइ बैठे, मानो गँध सुभाइ ।
बिंबेफल षट्‌ तहाँ................
राम (करी) रागे
देव देव अपना पतो, सुनि अवगति नाथ ।
राखु राखु कलि पखँड तें, धरि मस्तकु हाथ ।।
त्रिगुण रूप धरि मोहिनी, पसरी तेरी माया ।
अनिकन को सरवसु हिरचो, तव सरने आया ।।
काल रूप कों धारिकें, अंतरु उपजावे ।
निंद करमु ताँ तें बढे, सेवकु दुखु पावे ।।
त्राहि त्राहि दरप्यो अधिक, हरि करो सहाइ ।
केवलजन अपुना चितो, मनु अनत न जाई ।।१०५-२।।

राग किदारा

कुंजन मों बैठे पीय, बन्ये ठन्ये प्यारी संगि
नैनन सों नैना जोरि, पलु न लगतु है ।
चाहत परसपर, इक रस इक टक
चंद की चांदनी निसु, हित सों जगतु है ।।
चितवि चितवि मुसकत बोलत बचन
रसु उपजत मनु रस मै पगत है ।
केवल सोभा को सिंधु, प्यारी मुखु भयो इंदु
लग्ये हैं स्याम चकोर, तजि न सघतु है ।।१०६।।

राग किदारा-मारू

नेकु चितो इह ओर, प्यारी रस भरी लाडुली ।
हरि माथे धरि मोर, ठाढे है दरसन लिए ॥
हठु तजि मानु निचोरि, कुंज भवन सुखु दीजिए ।
आइ भई है भोर, मुसकि चलो बलि जाइए ॥
कुँज भवन निजु ठोर, रहस केल पिय सों करो ।
बचन कहत कर जोर, पिय को हेतु विचारिए ॥
चितवि नैन की कोर, अंतरपटु तजि लाल सों ।
परी प्रेम की डोर, सुनि बच दुलहनि उठि चली ॥
तह मिलि जुगल किसोर, भाँति भाँति लीला ठटी ।
सुनि नूपर की घोर, केवल मनु अटक्यो तहा ॥१०७॥

राग किदारा-मारू

प्यारी आपुने बदन, मो सों (जो) काहे न बोलत ।
बारि बारि मानो हारि, मानुनी मानु निवारि
अंतरपटु काहे न खोलत ॥
औगुन ना गनो मेरे, पाइ[न] परत तेरे
रसिक रसु काहे न झोलत ।
मुसकि निहारि लीजे, चितवि अपुनो कीजे
कुंजन मह काहे न डोलत ॥
बेनती मानो हमारी, चलहु लडेती प्यारी
नूपर पग काहे न चोलत ।
उठि मिल्ये भुजा जोरि, केवल लाल किसोरी
खेलत रस नैना जो लोलत ॥१०८॥

राग पंचम

आजु अनमने हो काहे लाल, बोलीए बलि जाँउ ।
नीचे नैन कर कपोल, बैठे कदम छाँड
केधों बोलत नही प्यारी, न्यारी भइ याँही ठाँउ
केवल प्रभ हसो नेकु, बेगि आनि मिलाँउ ॥१०६॥

राग किदारा

प्यारी मेरो लालु रँगीलो, रंगीली के बसि परचो ।
अतिगँभीर सोभा गुन सागर, पाछें डोलत रस भरचो
निरखि निरखि चटकी सी लागी, नैन नेह ढरनी ढरचो ।
केवल नित बिहारी बिहारिनि, बाल सनेहु रिदहि धरचो ११०॥

राग ढोला

अलबेला वे नंद दचा ॥
मोर चंदिका सीसि बिराजित, गली असादी आँउदा ।
स्याम सरीर कवल दल लोचन, गोपीजन मनि भाँउदा ॥
टेढी चाल चले मनमोहनु, चितु वितु हिरि ले जाँउदा ।
बेनु बजाए टोने लाए, मधुर मधुर सुरि गाँउदा ॥
नाचत खेलत गोप सखा सँगि, अंगि अंगि छबि पाँउदा ।
कुंजन मै राधा जिउ प्यारी, चरने लागी मनाँउदा ॥
सुभग सलोना नंद ढटोना, गृह कारज बिसराँउदा ।
यह छबि निरखि निरखि केवलजनु, फूल्या अंगन माँउदा ॥१११॥

राग तलिंग

मोहि लीनो मोहन मोहि लीनो
लाइ ठगोरी कीनी बौरी, टोना कोई कीनो ।
केवल नैन प्यारे, मेरे नैनन के तारे
टेढी चाल मुरली मुखि, राधा रस भीनो ॥
नासा मोती जगमग छबि पीत वसन हसन मंद
अरुन अधर स्याम रूप, भाल तिलकु दीनो ।
अंग अंग की निकाई, मो पें बरनी न जाई
केवल मनु लागि रह्यो, रूप सुधा पीनो ॥११२॥

राग विभासी तोदी

काहे कों आए हो मोहन मेरे ।
नई नई रीति प्रीति, वाही सों कीनी
तिहारो सों करत चिहन, दुरत नही तेरे ॥
निसु के उनीदे नैन, पल सों पलु मिलत जात
अलसानी बात करत, नीचें नीचें हेरे ।
केवलजन पीय रसिक सिरोमणि
भोर बोलें तमचर, भेजे हो कौने के प्रेरे ॥११३॥

राग ढोला

गिरिधरु लालुणी मेरे, प्रेम दा खिलोना !
बरहु सुहावणा मोहनु, स्यामणी सलोना ॥
बेनु बजाए धेनु चराए, देखत लाए टोना ।
पीतांबर धारी वनवारी, नंद का ढटोना ॥
छबि सोहे मेरा मनु मोहे, घात करे गज छौना ।
केवलजन वारी गिरिधारी, वसि असादे होना ॥११४॥

राग किदारा

आपुन पें आए लाल, हितु धरि हीएँ।
कुंज के भवन प्यारी, ठाढी मानु कीएँ ॥
ब्रिंदाबन रानी राधे, आबत निहारचो।
साँचुरी कों कहे बच, तबही निवारचो ॥
सुनहु सुनहु लाल, ठाढे रहु इहाँही।
पसरचो कपटु तेरो, प्यारी मन माँही।
तबहि भभकि बोली, वाँ सों ललिता री ॥
तेऊ पंखी और उडें, मारचें करतारी ॥
त्रिभुवन जाँ कों ध्यावें, सुर सिव धाता।
प्यारी जीउ के केल हिति, धरि आए गाता ॥
तबही मुसकि लाल, ठाढे रहे दीना।
प्यारी जी सों जाहि कहो, कहा मोहि कीना ॥
मानुनी न मानत जो, निरनउ कीजे।
तैसेही मानु मनावो, जैसे ही पतीजे ॥
दुलहनि बच सुन्ये, हित लपटानी।
नैनन तें ढरि चल्यो, मानो मानु पानी ॥
मिल्ये है मोहन राधा, हित रस माँही।
करत विलास हास, कछु मिति नाँहुी ॥
एक रूप एक प्रान, नवल सनेही।
गौर स्याम देखन मै, उजल है देही ॥
इक मुखि कहा कहों, चरित अगाधा।
केवल नित्य बिहार, मोहन श्रीराधा ॥११५॥

राग किदारा

ठाढी है नागरि प्यारी कुंज भवन।
सखी भेषु धारो लाला, करीए गवन ॥
संगि नवीनी बाला, करत बिलासा।
कोटि इंद मानो प्यारी, बदन प्रकासा ॥
नवसत साजे अंगि, अनंदु बढायो।
सोभा को सागरु मानो, रूपु धरि आयो ॥
कसुंबे की सारी धारी, सीसफूल संगा।
निसा तें प्रगटु रवि, मानो अरुन रंगा ॥
मोत्यन को माँग सोहे, मोहे मैन मीना।
रूप[1] जल जटा लागी, होइ रहे छीना ॥
श्रवन तरोना हेम, अति छबि धारें।
मानो जुग[ल] चकोर, ससि को निहारें ॥
बिमल कमल नैना, दीरघ ढरारे।
भौंअ भ्रमर मानो, टरत न टारे ॥
सुभग नासिका मोती, बेसर सों झूले।
अमी हिति तपु करे, अधरन कूले ॥
दसन चंपे की कली, अतिदुति धारी।
अधर तंबोल रसु, फेंल परचो भारी ॥
चिबकु ढिठोना लोना, अतिछबि पावे।
कवल कली मों मानो, भवरु लुभावे ॥
त्रिबली रेखा ग्रीवाँ मै, दुलरी सों राजे।
बिरह दहन मानो। पंच बान साजे ॥
अंगीया सोहे बचित्र, उर परि हारा।
दधि सुत उदै मानो, दुतिया की धारा ॥
अंग अँग नीके सोहे, भूषन की झाला।
किंकनी कटि बिराजे, मत गज चाला ॥

---

१. रूप जल जटा--यहाँ शायद लिपिकारों ने 'छटा' के स्थान पर 'जटा' का प्रयोग किया है।

लहगो कटि बिराजे, नूपर झुनकारा ।
नख सिख सोभा बनी, सुभग अपारा ।
दूती बच सुन्ये लाल, सखी भेषु लीनो ।
कुँज भवन आए, विलंबु न कीनो ॥
भामुनी जान्ये पछान्ये, मुरि मुसकानी ।
रसिक राइ त्रिभंगी, मिल्ये राधा रानी ॥
गावे सुने एही रसु, अतिसुखु पावे ।
केवल निरखि छबि, नाँहिन अघावे ॥११६॥

राग किदारा

आजु बैठे कुँजन में, राधिका रवन ।
जाँ की आभा जगु सोहे, सोभा को भवन ॥
मधुर मधुर मुखि, बोलत है बानी ।
नवल लडेते लाल, राधिका जाउ रानी ॥
चितवि चितवि पीय, हसत भामुनी ।
स्याम घटा संगि मानो, लसत दामुनी ॥
कर सों करु आपुनो, धरि चपटायो ।
मानो अहि मणि लीए, अति सुखु पायो ॥
आधी सो राति भई, ससि जोति कीनी ।
आपुने कर पीया कों, बीरी मुखि दीनी ॥
नागरि कह्यो पीय पै, बंसी कों बजावो ।
रागु किदारा मो सों, इक सुरि गावो ॥
तबहु बजायो हरि, गायो होइ संगी ।
छबि सुखु देखि भए, लजित अनंगी ॥
राजित रस बिहार, तलप नवेली ।
राधा माधो वाहि लीने, केवल सहेली ॥११७॥

राग तलिंग

लोलो देवाँ मोहन लाल कों लोली ।
देखि देखि जोवाँ मईया जसुमति[1] मौली ॥
झुलु पिघूड़े लुड्डु कनैया मैंदडी झोली ।
वदा थीवें तें चिरु जीवें बोलत मिथडी बोली ॥
दुधु पिवाइ सुभेषु रचाइ सुपूत नाँ घोली ।
नंद को नंदनु दैत निकंदनु गोप सखा संगि टोली ॥
रिधि सिधि तेरे द्वारे ठाढी लछमी गोली ।
अंगणि उतें पेर डेदे मुखडा चोली ॥
स्याम सलोने कवल नैन मुसकनी थोली ।
ब्रज वधू मनु हिरन हार खसि पीवे दुधु दोली ॥
राधा संगि बन बिहार कुँजन ओली ।
मोर पंख माथे बन्यो मुकट की खोली ॥
आदिपुरुष बाल रूपु गति न जावे तोली ।
केवल बलि जाँउ गाँउ तेरे गुन अमोली ॥११८॥

राग असावरी

आउ निहारि री निहारि, प्रेम मगन भई गुआरि ।
दधि (के) बीचि स्यामसुंदरु, रही पुकारि पुकारि ॥
मटकी गिरि धरन परी, ठाढी भुजा पसारि ।
भूषन बसि उलटि परचे, रही नाहि संभारि ॥
डोलत गज मत जैसे, लोक लाज ढारि ।
केवल पीय लाल सों (री), लागी नैन तारि ॥११९॥

---

१. जसुमति मौली— इसका अर्थ हो सकता है 'फली-फूली', देखिये संस्कृत क्रिया 'मुकलयति', या 'जसुमति की चूड़ामणि', देखिये सिन्धी 'मौले'।

राग किदारा

मामुनी न छाडे मानु, अब कहा कीजे ।
साम दाम बच कहे, कैसे न पतीजे ॥
रसिक रसीले नैन, नेकु न निहारे ।
राख्यो है करु कपोल, अतिछबि धारे ॥
अधर दसन दीएँ, खोदत अवनी ।
देखी न सुनी मै काहू, ऐसी तो रवनी ॥
सुनत न मानत न, जानत न तो कों ।
देखत अचंबो एही, लागि रह्यो मो कों ॥
आधी सी राति गई, भई कठनाई ।
ससि तें उजारी प्यारी, छबि पसराई ॥
चुभि रहे नैना मेरे, आवनु भुलानो ।
उलटि हमारो जीउ, भयो कानु मानो ॥
फेरि फेरि लीनो मनु, जतन न आई ।
इक मुखि कहा कहों, छबि की निकाई ॥
मानु न छाडे कैसे, कहि अकुलानी ।
कुँज (के) मंदिर पौढी, राधिका जीउ रानी ॥
बेनती सुनो हमारी, इक चतुराई ।
सखी भेषु धारि मिलो, केवल कनाई ॥१२०॥

राग किदारा

रटत पीउ श्रीराधा श्रीराधा ।
ब्रिंदाबन रानी ठकुरानी, सोभा सिंधु अगाधा ॥
बिधु बदनी रास रस सदनी, हित रदनी छबि बाधा ।
केवल तुम बिनु ब्रज नाइक जिउ, नैनन मों जलु आधा ॥१२१॥

राग आसा

मोहनु खेलै राधा नालि ।
ब्रिंदाबन के कुंजन माँही, सुंदर नैन बिसाल ॥
माथे मुकटु बन्ये बस अदभुत, अँग अँग भूषन झाल ।
मुरली बाजे कोइल गाजे, मोहि लई ब्रज बाल ॥
नाचत गावत नूपर बाजे, सुंदर सबद रसाल ।
अदभुत जोरी चित वित चोरी, उर वैजंती माल ॥
अंस अंस धरि भुजा परसपर, करत रसीली गालि ।
कनक बेल श्री राधा प्यारी, दूलह स्याम तमाल ॥
जुग जुग जोरि सहज विलासो, रसिकनि रस प्रतिपाल ।
बलि जावे केवल गुन गावे, चुखु[1] असाँ दो भालि ॥१२२॥

राग सोरठि

साँवरीयो रंग भीनो हमरो साँवरीयो रंग भीनो चुखु नैनन अंजनु दीनो ।
मोर चंद्रिका सीस बिराजित, कोइ पडि टोना कीनो ॥
मधुर मधुर मुखु बेन बजावत, धुनि सुनि मनु हिरि लीनो ।
नासा बेसर कुंडल दुलरी, यह छबि पावत तीनो ॥
जमुना तटि बिहरत कुंजन मों, दूधु हमारो पीनो ।
केवल बली भए गिरिधारी, गृह गृह माखनु छीनो ॥१२३॥

---

१. 'चुखु असाँ दो भालि'—हमारी ओर देख ।

राग किदारा

नवल किसोरी राधे, हित रस भरी ।
सखी संगि सोसि धारी, कंचन गगरी ॥
रतन खचित तरे, नानी सी इँढूरी ।
दोउ कर संगि सोहे, चारु चारु चूरी ॥
छबि भारी सादी सारी, कुवरि लजीली ।
चलत रसीली चाल, गज गति ढोली ॥
जहाँ जहाँ पगु धरें, हरित अवनी ।
देखी न सुनी मै आगें, ऐसी तो रवनी ॥
जेहर की धुनि सुनि, मगु तजि आए ।
लाल देख्यो लाडुली कों, हित ललचाए ॥
लागि चल्ये पाछें पीय, जान्ये राधा रानी ।
अतिसुकुमारी प्यारी, बहु सकुचानी ॥
काहू सों न बोले बैन, नैन नीचे कीए ।
बसनु दसन दीनों, लजा अति हीए ॥ ।
रूखी भौंआ रिसि भरी, मुरि न निहारे ॥
देखि देखि सोभा लालु,, धीरि नही धारे ।
डोलत आवत पाछें, बोलत बचन ॥
हित की बतीयाँ बहु, धरें न श्रवन ।
और सखी लखि पाए, कुँज ओटि दीनो ।
दौरि आए आगें स्याम, बाटि रोकि लीनी ॥
तबही मुसकि बोली, प्रेमु प्रीति जानी ।
लगनि इक तें इक, अति पसरानी ॥
ता दिन कों परचो प्रेमु, राधिका मोहन ।
केवल देख्यो बिलासु, जावत गोहन ॥१२४॥

राग बिलावलु

धन्यु जसुदाँ बड भाग्य तुमारे ।
आंगन तेरे खेलत मोहन
स्याम सुभग नैनन के तारे ॥
पलने झुलावत गोदि खिलावत
दूधु पिवावत अतिहितु धारे ।
छँगन मँगन ललना कों नित प्रति
मुख चुंबत प्रानन तें प्यारे ॥
सिव ब्रह्मादिक अरु सनकादिक
जाँ कों ढूँढत अनिक प्रकारे ।
केवल तेउ भए सुत तेरे
जा को सुजसु गाइ श्रुत चारे ॥१२५॥

राग बिलावलु

आजु सखी निरखत न अघानी
बोलत लालु तोतरी वानी ।
फूली नख सिख जसुदाँ रानी
वंछा सफलु आपुनी जानी ॥
सुनि सुनि बच मइया मुसकानी
वारि वारि पीवत है पानी ।
लीओ उठाइ सकल लपटानी
केवल सोभा अति पसरानी ॥१२६॥

राग मलार

अपुनी कमरिया देहु (हो लाल) मो कों, अपुनी कमरिया देहु ।
पवनु लागत कँपत तनु मेरो, बरसत सीतल मेहु ॥
पातन को छतनो अपुने हिति, बेगि होइ करि लेहु ।
केवल कुंजन मै दोउ बिहरत, दिन दिन अधिक सनेहु ॥१२७॥

राग आसा

रसना जुगल चरन रसि बसु ।
गाउ गुणानुवाद अति उत्तम, साध संग मिलि हसु ॥
करो अभ्यासु रैन दिन ततपर, निजु विस्वास धरि घसु ।
परम अछाउ भाउ धरि लीजे, भगति कसोटी कसु ॥
लीला नित बिहार ब्रिंदाबन, सदा करो यह् जसु ।
राधा लाल बिना कछु गावे, तिनु विमुखन तें नसु ।
नरग सरग कलि पखँड काल भय, किनु डर नाहिन त्रसु ।
केवलजन द्रिढ करि उपासना, सदा राखु रिदि रसु ॥१२८॥



विशिष्ट शब्द-सूची

अतिलस	(=अतिलस) साटन (एक प्रकार का रेशमी कपड़ा)
अभ्रव	बादल
अवर	और, दूसरा
असाँ/असा	मैं, हम
असादी	हमारी
असादे	हमारे
इस्तति	स्थिति
उतें	में, पर
उरपतिरप	नृत्य का एक भेद
काई	'कोइ' या 'कोउ' का स्त्रीलिंग रूप
खोभी	कान का एक आभूषन
खोली	टोपी
गड्डु	भाला (संस्कृत 'गड')
गहरु	देरी
गैन	गगन
गोली	दासी, नौकरानी
गोहन	के साथ
चेटकु	जादू-टोना
चोंप	अनुराग
जीपि	जीतकर
ठटु	षड्यंत्र, दिखावा
तलप	तल्प, शय्या
ताडी/तारी	ध्यानावस्था, समाधि
तिपि	उसी की ओर

दरिघ	एगाग्रता
ढोली	कटोरी
नालि	के साथ
पतीजे	मनवाए, विश्वास कराए
पिघूडे	पलने में
बजित्र	वाद्ययंत्र
बसीले	के बस में, की वजह से
बाधा	बढ़ाती हुई
बीथुन	गलियों में
भाम	भामिनी
मखतूल	काला रेशम
माँउदा	में
मष्टि	मौन
मुचें	मुक्त हो जाता है
मैंदडी	मेरी
मैन	मदन (कामदेव)
रिद	हृदय
रिदि/रिदे	हृदय में
वच	वचन
विषे	में
सुढार	ललित
सुगंध	ललित
सीवाँ	सीमा

मुद्रक : विद्यालय प्रेस, वृन्दावन-२८११२१

